प्राचीन भारत

परिचय

- अतीत काल की घटनाओँ की स्थिति की जानकारी देने वाले शास्त्र को ही हम 'इतिहास' कहते है
- प्राचीन भारतीय इतिहास की विशद सामग्री को सार्वजनिक एंव समझने योग्य बनाने के इतिहासकारों ने इसे तीन भागों मे बाँटा है -
- प्रागैतिहासिक काल
- आघ- ऐतिहासिक
- ऐतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल

- (प्राक्+इतिहास) अर्थात इस काल का इतिहास पूर्णतः पुरातात्विक साधनों पर निर्भर है इस काल का कोई लिखित साधन उपलब्ध नही है ,क्योकि मानव का जीवन अपेक्षाकृत असभ्य एंव बर्बर था

  मानव सभ्यता के इस प्रारम्भिक काल को सुविधानुसार तीन भागों मे बाँटा गया है-

  1. पुरा पाषाण काल
  2. मध्य पाषाण काल
  3. नव पाषाण काल या उतर पाषाण काल

1.पुरापाषाण काल

- हैण्ड-ऐक्स, क्लीवर और स्क्रैपर आदि विशिष्ट उपकरणों पर आधारित पुरापाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष सोहन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी तथा नर्मदा नदी घाटी एंव भोपाल के पास भीमबेटका नामक चित्रित शैलाश्रयों से प्राप्त हुआ है

2.मध्य पाषाण काल

- मध्य पाषाण काल में प्रयुक्त होने वाले उपकरण बहुत छोटे होते थे इसलिए इन्हें 'माइक्रोलिथ' कहते है |
- मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर पशुपालन का प्राचीनतम् साक्ष्य इस काल में प्रस्तुत करते है |
- इस काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ के सराय नाहर तथा महदहा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है |

3.नव पाषाण काल

- नव पाषाण युग के प्रथम उपकरण उ॰प्र॰ के टोंस नदी घाटी में सर्वप्रथम 1860 में लेन्मेसुरियर ने प्राप्त हुआ |
- नव पाषाण युगीन प्राचीनतम बस्ती पाकिस्तान में स्थित बलूचिस्तान प्रांत में मेहरगढ़ में है | मेहरगढ़ में कृषि के प्राचीनतम् साक्ष्य मिले है |
- नव पाषाण कालीन स्थल- बुर्जहोम एंव गुफकराल से अनेक गर्तावास और अनेक प्रकार के मृदभाण्ड एंव प्रस्तर तथा हड्डी के अनेक औजार प्राप्त हुए है |
- बुर्जहोम से प्राप्त कब्रों से पालतू कुत्तों को मालिक के साथ दफनाया जाता था | यह प्रथा भारत के किसी भी अन्य नव पाषाण कालीन स्थल से नहीं प्राप्त होती है |
- चिराँद नामक नव पाषाण कालीन पुरास्थल एक मात्र ऐसा पुरास्थल है जहाँ से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण पाये गये है | जो मुख्य रूप से हिरन के सींगों के है | ये उपकरण ताम्रपाणिक अवस्था के प्रतीत होते है |

- इलाहाबाद में स्थित कोल्डिहवा एक मात्र ऐसा नव पाषाणिक पुरास्थल है जहाँ से चावल का प्राचीनतम् साक्ष्य प्राप्त हुआ है |
- नव पाषाण युग के निवासी सबसे पुराने कृषक समुदाय के थे मिट्टी और सरकंडे के बने गोलकार या आयताकार घरों में रहते थे |
- मेहरगढ़ में बसने वाले नव पाषाण युग के लोग अधिक उन्नत थे | वे गेहूँ,जौ और रुई उपजाते थे और कच्ची ईंटों के घरों में रहते थे |
- दक्षिण भारत में नव पाषाण कालीन सभ्यता का मुख्य स्थल बेलोरी है |
- कुम्भ्कारी सर्वप्रथम इसी काल में दृष्टिगोचर होती है |
- नव पाषाण स्तर की प्रमुख उपलब्धि खाद्य उत्पादन का आविष्कार पशुओं के उपयोग की जानकारी और स्थिर ग्राम्य जीवन का विकास है |

आद्य-ऐतिहासिक काल

- यह काल साहित्यिक एंव पुरातात्त्विक दोनों प्रकार के साधनों पर निर्भर है | हड़प्पा की संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति की गणना आद्या इतिहास में की जाती है | परन्तु आद्य ऐतिहासिक काल की लिपियों को पढ़ने में सफलता नहीं मिलती है |
- गैरिक एंव कृष्ण लोहित मृदभाण्ड संस्कृति इस काल से सम्बन्धित है |

ऐतिहासिक काल

- इस काल को इतिहासकार उस काल की संज्ञा देते हैं जिसके लिए लिखित साधन उपलब्ध है और जिसमें मानव सभ्य बन गया था | यह काल पुरातात्त्विक, साहित्यिक तथा विद्रोहियों के वर्णन पर निर्भर है |

पुरताव्तिक साक्ष्य

- इसके अंर्तगत मृदभांड,अभिलेख,सिक्के,चित्रकला एवं मूतिकला आते है इतिहास जानने के लिए पुरताव्तिक साक्ष्यो का विशेष महत्व है |

मृदभांड

- विभिन्न कालों एवं लोगों द्वाराप्रयोग में लाए गए मृदभांड खुदाई में पाए गए है जो इस प्रकार है ;
- सिन्धु सभ्यता के लोगों एक विशेष लाल मृदभांड का प्रयोग करते थे |
- काले एवं लाल मृदभांड 2400 **BC** से 100 ईं तक प्रयुक्त किए जाते थें|
- चित्रित घूसुर मृदभांड(PGW)- इस मृदभांड का प्रयोग वैदिक लोग करते थे |

अभिलेख

- अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र कहा जाता है | अभिलेख मुख्यत : स्तम्भों,शिलाओ ,तार्म्रपुत्रों,मुद्राओ,मूर्तियोंएवं गुफाओं में खुदे हुए मिले है |
- सवांर्धिक प्राचीन अभिलेख हड़प्पा काल के है ईरान के बोगजकाई अभिलेख 1400BCके हैं भारत अशोक प्रथम राजा है जिसने जनता को अभिलेखों के माध्यम से संबोधित करने की परम्परा शुरू की | अशोक के अभिलेखको पढने काश्रेय 1837 ईं में जेम्स प्रिसेय को जाता है |

- अशोक के मेंरठ एवं टोपरा के स्तम्भ लेखों को फिरोज शाह तुगलक़ द्वारा दिल्ली लाया गया तो अकबर ने कौशम्बी के अभिलेखों को उठाकर इलाहाबाद के किले में रखवांया |
- कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख और राजाओ के नाम इस प्रकार हैं |

जूनागढ़ अभिलेख	रूदर्दामन
हाथी गुम्फा अभिलेख	खारबेल
नसिक प्रशिस्त	गौतमीपुत्र शातकर्णी
प्रयाग प्रशस्ति	समुद्रगुप्त
महरौली लौह स्तम्भ	चन्द्रगुप्त द्वितीय
भीतरी अभिलेख	स्कद गुप्त
एहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय
मधुवन एंव बासखेडा अभिलेख	हर्षवर्द्धन

सिक्के

- सिककों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते है | भारत के प्राचीनतम सिक्के आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के है जो मुख्यत: 500BCके है जो चादी के बने होते थे |
- सर्वप्रथम सिककोंपर लेख उत्कीर्ण करवांने का श्रेय यवनो को है| सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्का जारी करने का क्षेय भी यवनो को ही है |
- सबसे अधिक सिक्के मौर्तोतर काल के मिले है गुप्त काल मेंसोने के सबसे अधिक सिक्के जारी किए गए| जबकि सबसे शुद्ध सोने के सिक्के कुषाण शासको द्वारा जारी किए गए |

चित्रकला एवं मूर्तिकला

- हड़प्पा की खुदाई से अनेको मूर्ति मिली है जिससे मूर्तिकला के विकास के साक्ष्य प्राप्त होते हैं परन्तु बाद में मूर्ति निर्माण का श्रेय मथुरा कला को जाता है जो प्रथम सदी से बुद्ध के मूर्ति के निर्माण से शुरू होती है|
- गुफाओं में चित्रो द्वारा भी कला का प्रदर्शनकिया गया | इसके सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले के अजन्ता एवं एलोरा की गुफा चित्रों से प्राप्त होते हैं मध्यप्रदेश के धार जिले मेंबाघ की गुफा मिली है |

साहित्यिक स्त्रोत

- साहित्यिक स्त्रोत को दो भागों में बांटा जा सकता है वैदिक साहित्य एवंवैदिकतोतर साहित्य|

वैदिक साहित्य

- वैदिक साहित्य के अर्तगत चारो वेद,ब्राहाण,अरण्यकएवं उपनिषद् ग्रन्थ आते हैं |

- स्मृतियों की रचना 200BC से 400 ई. के बीच किया गया है | इसमें मुनष्य के सम्पूर्ण जीवन के क्रियाकलापो का वर्णन किया गया है | इसमें महत्वपूर्ण स्मृति ग्रन्थ मनुस्मृति है|
- सूत्र सहित्य की रचना अधिक से अधिक तथ्यों का कम से कम शब्दों या सूत्र में किया गया |
- वेदों के अर्थ को भली भाति समझाने के लिए वेदांग की रचना की गई| वेदांग छः प्रकार के है :-
- शिक्षा,कल्प,व्याकरण,निरक्त,छन्द| कल्प सूत्र के तीन भाग होते है -1. स्त्रोत सूत्र 2.गृहा सूत्र 3.धर्म सूत्र

हाकाव्य

- रामायण एवं महाभारत के दो प्रमुख महाकाव्य है | इनका अंतिम रूप से संकलन 400 ई. के आस पास हुआ |महाभारत की रचना वेदव्यास ने की इसका प्राचीन नाम जय-संहिता था | महाभारत का युद्ध900 BC के आस पास हुआ था रामायण की रचना बाल्मिकी ने की|

पुराण

- पुराण का अर्थ प्राचीन होता है पुराणो की कुल संख्या लगभग 18 है इसमें मत्स्य पुराण पुराणोंमें सबसे प्राचीन माना जाता है|

बौद्ध सहित्य

- बौद्ध सहित्य जातक का प्रमुख स्थान है| इसमेंबुद्ध के पुर्वजन्म की गाथाएँ है इसके अलावांबौद्ध सहित्य मेंत्रिपिटक का विशेष महत्व है क्योंकि इसका सकलन बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध संगीत में किया गया । त्रिपिटक तीन प्रकार के हैं:-

1 .सतपिटक-बुद्ध के धार्मिक विचार और वचनोंकासंग्रह

2. विनय पिटक-नियम एवं कानून की व्याख्या

3 .अभिधम्म पिटक बौद्ध मतो की दार्शनिक व्याख्या |

- इसके अलावां अन्यबौद्ध ग्रन्थ इस प्रकार हैं-अगुंतर निकाय - 16 महाजनपदो का वर्णन हैं
- दीपवंश और महावंश श्रीलंका के ग्रन्थ हैं | इससे मौर्य-कालीन इतिहास की जानकारी मिलती है|

जैन साहित्य

- जैन साहित्य को अंग कहा जाता है | इनमेंप्रसिद्ध12 अंग है |
- भगवती सूत्र महावींर के जीवन पर प्रकाश डालता है |
- भद्रबाहु चरित्र - चन्द्रगुप्त मौर्य के समय पर प्रकाश डालता है।

अन्य साहित्य	रचनाकार
अर्थशास्त्र	कौटिल्य या चाणक्य
कुमारसंभव,मालविकाग्निमित्र	कालिदास
हर्षचिरत	वांणभट्ट
विक्रमांक देव चरित्र	विल्हण
राजतरंगिणी	कल्हण
मृच्छकटिकम	शूद्रक
किताबुल हिन्द	अलबरूनी

विदेशी यात्री

मेंगास्थनीज

- यह चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस का दूत था| उसने 'इण्डिका' नामक ग्रन्थ की रचना की|

फाहियान

- यह प्रमुख चीनी यात्री था जो बौद्ध मतावलम्बी था| यह गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीयके दरबार में भारत आया था |प्रसिद्ध

ह्वेनसांग

- प्रसिद्धचीनी हर्ष के दरबार 629 ई. भारत आया ।ह्वेनसांग की भारत का वृतात हमें चीनी वृतांत 'सी यू की ' से मिलता है

पाषाण काल

- पाषाण के उपकरण के प्रयोग के आधार पर इस काल को तीन भाग में बांटा गया है |

पुरा पाषाण काल

- यह काल 36 हजार BC तक आता है | इसमें पाषाण/ पत्थर के औजारों का उपयोग किया गया जो आकार के विभिन्न होते थे इस काल मनुष्य घुमन्तु प्रकृति का था | शिकारद्वाराखाद्य की पूर्ति करता था|
- इस काल केसाक्ष्य पाकिस्तान की सोहन नदी,उत्तर प्रदेश की बेलन नदी घाटी से मिलते है| इसी काल में इलादाबाद की बेलनघाटीमें स्थित लोहंदा नाले मेंमातृदेवीं की मूर्ति मिली है|

मध्य पाषाण काल

- यह पुरा पाषाण काल एवं नव पाषाण काल का संक्रमण काल है | इस काल के उपकरण सूक्ष्म एवं संगठित औजार है | इस काल की बस्तियांउत्तर प्रदेश के सरायनाहरराय,मध्य प्रदेश के भीमबेटका पाई गई है|

नव पाषाण काल

- नव पाषाण कालकी प्रमुख विशेषता रोगन किए हुए पत्थर के औजार हैं | इस काल में मनुष्य ने धीरे-धीरे स्थायी जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया था |मेंहरगढ़ से नवपाषाण कालिन आवांस के अवशेष के साथ-साथ गेहूं,जौ की खेती के प्रमाण मिले है|
- नव पाषाण कालके बाद ताम्र पाषाणिक संस्कृति का उदय होता है, जिसमें मनुष्य स्थायी ग्रामीण जीवन व्यतीत करने के साथ-साथ सबसे पहले ताँबा नामक धातु का उपयोग भी करना शुरू कर दिया जिससे उपकरण बनाने सहायता मिली|

सिंधु(हड़प्पा) सभ्यता

1. सिंधु (हड़प्पा) सभ्यता

- इस सभ्यता के लिए साधारण: तीन नामों का प्रयोग होता है - 'सिन्धु सभ्यता', 'सिन्धु घाटी की सभ्यता' और 'हड़प्पा सभ्यता' | इनमें से प्रत्येक शब्द की एक पृष्ठभूमि है |
- प्रारम्भ में पश्चिमी के हड़प्पा एवं तत्पश्चात मोहनजोदड़ो की खोज हुई तब यह सोचा गया कि यह सभ्यता अनिवार्यत: सिन्धु घाटी तक सीमित थी | अत: इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता का नाम दिया गया |
- हड़प्पा या सिन्धु संस्कृति का उदय ताम्र पाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ | इसका नाम हड़प्पा संस्कृति पड़ा क्योंकि इसका पता सबसे

पहले 1921 में पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रांत में अवस्थित हड़प्पा के आधुनिक स्थल में चला |

- इस परिपक्व हड़प्पा संस्कृति का केंद्र-स्थल पंजाब और सिंध में मुख्यत: सिन्ध में पड़ता है |
- दजला-फरात और नील घाटी सभ्यताओं की समकालीन यह सभ्यता अपने विशिष्ट नगर नियोजन और जल निकासी व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है |
- सन् 1921 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के महानिर्देशक सर जान मार्शल के निर्देशन में राय बहादुर दयाराम साहनी ने पंजाब के माण्टगोमरी जिले में रावी के तट पर स्थित हड़प्पा का अन्वेषण किया |
- जान मार्शल ने सर्वप्रथम इसे सिन्धु सभ्यता का नाम दिया |
- इस सभ्यता के अब तक 350 से अधिक स्थल प्रकाश में आ चुके है | इसका अधिकांश स्थल गुजरात में है |
- विभाजन के पूर्व उत्खनित अधिकांश स्थल विभाजन के उपरांत पाकिस्तान में चले गये | अपवाद स्वरूप दो स्थल कोटला निहंग खाँ सतलज नदी पर तथा रंगपुर मदर नदी तट पर भारतीय सीमा क्षेत्र में शेष बचे है |

काल निर्धारण

- सैन्धव सभ्यता की तिथि को निर्धारित करना भारतीय पुरातत्व का विवादग्रस्त विषय है | यह सभ्यता आरंभ से ही विकसित रूप में दिखाई पड़ती है तथा इसका पतन भी आकस्मिक प्रतीत होता है ऐसी स्थिति में कुछ भी निश्चित तौर पर नहीं जा सकता |
- इस क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रयास जान मार्शल का रहा है | उन्होंने 1931 में इस सभ्यता की तिथि लगभग 3250 ई० पू० से 2750 ई० निर्धारित किया |
- रेडियों कार्बन-14 जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड़प्पा सभ्यता की तिथि 2500 ई० पू० से 1750 ई० पू० माना गया है | जो सर्वाधिक मान्य है |
- नवीनतम आकड़ों के अनुसार यह सभ्यता 400-500 वर्षो तक विद्यमान रही तथा 2200 ई० पू० से 2000 ई०पू० के मध्य यह अपने परिपक्व अवस्था में थी |

विस्तार

- अब तक इस सभ्यता के अवशेष पाकिस्तान और भारत में पंजाब, सिन्ध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पश्चिमी उ० प्र०, जम्मू-कश्मीर, पश्चिमी महाराष्ट्र के भागों में पाये जा चुके हैं |
- इस सभ्यता का फैलाव में जम्मू से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक और पश्चिम में मकरान समुद्र तट से लेकर पश्चिमी उ० प्र० में मेरठ तक है |
- इस सभ्यता का सर्वाधिक पश्चिमी पुरास्थल सुत्कागेडोर पूर्वी पुरास्थल आलमगीर उत्तरी पुरास्थल माँडा तथा दक्षिणी पुरास्थल दैमाबाद है |

- इस त्रिभुजाकार क्षेत्र का क्षेत्रफल वर्तमान में लगभग 13 लाख वर्ग कि०मी० है |
- इस सभ्यता के विस्तार के आधार पर ही स्टुअर्ट पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियाँ बताया है |

सिन्धु सभ्यता के निर्माता

- सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रवर्तकों या मूल संस्थापकों के सम्बन्ध में हमारी उपलब्ध जानकारी केवल समकालीन खंडहरों से प्राप्त मानव कंकाल और कपाल है |
- प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि मोहनजोदड़ो की जनसंख्या एक मिश्रित प्रजाति की थी जिसमें कम से कम चार प्रजातियाँ थी |

1. प्रोटो-आस्ट्रेलाइड
2. भूमध्य सागरीय
3. अल्पाइन
4. मंगोलायड

- आमतौर पर यही धारण है कि मोहनजोदड़ो के लोग मुख्यत: भूमध्यसागरीय प्रजाति के थे |
- किसी प्रजाति विशेष द्वारा सिन्धु सभ्यता के प्रवर्तन या संस्थापन करने के लिए संबंध में इतिहास एवं पुरातत्वविदों के मध्य काफी मतभेद है |
- सिन्धु सभ्यता के प्रवर्तकों को द्रविड़,ब्राहुयी, सुमेरियन, पणि असुर, वृत्य, बाहीक, दास, नाग, आर्य प्रजातियों से संबंधित बताया जाता है |
- परन्तु अधिकांश विद्वान् इस मत से सहमत है कि द्रविड़ ही सैन्धव सभ्यता के निर्माता थे |

मुख्य स्थल

- सिन्धु घाटी के जिन नगरों की खुदाई की गई है उन्हें निम्नलिखित वर्गो में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. केन्द्रीय नगर
2. तटीय नगर और पतन
3. अन्य नगर एंव कस्बे

केन्द्रीय नगर-

- सिन्धु सभ्यता के तीन केन्द्रीय नगर-हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और धौलावीरा समकालीन बड़ी बस्तियाँ थीं |

1. हड़प्पा

- पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के बायें तट पर यह पुरास्थल स्थित है |
- हड़प्पा के टीले या ध्वंशावेशेषों के विषय में सर्वप्रथम जानकारी 1826 में चालर्स मेर्सन ने दी |
- 1921 में दयाराम साहनी ने इसका सर्वेक्षण किया और 1923 से इसका नियमित उत्खन्न आरंभ हुआ | 1926 में

माधोस्वरूप वत्स ने तथा 1946 में मार्टीमर ह्वीलर ने व्यापक स्तर पर उत्खन्न कराया |

- हड़प्पा से प्राप्त दो टीले को नगर टीला तथा पश्चिमी टीले को दुर्ग टीला के नाम से सम्बोधित किया गया है |
- यहाँ पर 6-6की दो पक्तियों में निर्मित कुल बाहर कक्षों वाले एक अन्नाग्र का अवशेष प्राप्त है | जिसका कुल क्षेत्र 2,475 वर्ग मी. से अधिक है |
- हड़प्पा के सामान्य आवास क्षेत्र के दक्षिण में एक ऐसा कब्रिस्तान स्थित है जिसे समाधि आर-37 नाम दिया गया है |
- हड़प्पा के किले के बाहर कुछ ऐसे भवन हैं जिनकी पहचान कर्मचारियों के आवास, दस्तकारी के मंच और 275 वर्ग मी. में फैले अन्नागार से की गई है |
- सिन्धु सभ्यता में अभिलेख युक्त मुहरें सर्वाधिक हड़प्पा से मिले हैं |
- हड़प्पा में दो कमरों वाले बैरक भी हैं, जो शायद मजदूरों के रहने के लिए थे |
- नगर की रक्षा के लिए पश्चिम की ओर स्थित दुर्ग टीले को ह्वीलरने माउण्डए-बी की संज्ञा प्रदान की है |
- इसके अतिरिक्त यहाँ से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण अवशेष एक बर्तन पर बना मछुआरे का चित्र शंख का बना बैल, स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौध (जिसे उर्वरता की देवी माना गया है) पीतल का बना इक्का, ईंटों के वृताकार चबूतरे, गेहूँ तथा जौ के दानों के अवशेष आदि मिले हैं |

2.मोहनजोदड़ो

- सिन्धी में इसका शाब्दिक अर्थ "मृतकों का टीला" यह सिंध के लरकाना जिले में सिन्धु नदी तट पर स्थित इसकी सर्वप्रथम खोज राखालदास बनर्जी ने 1922 में की थी |
- मोहनजोदड़ो का शायद सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है विशाल स्नानागार, जिसका जलाशय दुर्ग टीले में है | यह 11.88 मी. लम्बा, 7.01 मी. चौड़ा और 2.43 मी. गहरा है |
- यह विशाल स्नानागार धर्मानुष्ठान सम्बन्धी स्नान के लिए था | मार्शल ने इसे तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण कहा |
- विशाल अन्नागार -मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत है | जो 45.71 मी. लम्बा और 15.23 मी. चौड़ा है |
- मोहनजोदड़ो में नगर योजना के अंतर्गत उत्तर-दक्षिण एवं पूर्व-पश्चिम की ओर जाने वाली समान्तर सडकों का जाल बिछा था जिन्होंने नगर को लगभग समान आकार वाले खण्डों में विभाजित कर दिया था |
- मोहनजोदड़ो की शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक थी |

- यहाँ के किले की रक्षा प्रणाली हड़प्पा के किले के समान थी | इसमें एक सुनियोजित नगर के सभी तत्व दिखाई देते हैं |
- मोहनजोदड़ो के पश्चिमी भाग में स्थित दुर्ग टीले को 'स्तूपटीला' भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ पर कुषाण शासकों ने एक स्तूप का निर्माण करवाया था |
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्य अवशेषों में 'महाविद्यालय भवन', काँसे की नृत्यरत नारी की मूर्ति, पुजारी (योगी) की मूर्ति, मुद्रा पर अंकित पशुपति नाथ (शिव) की मूर्ति, कुम्भकारों के छः भट्ठे, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल खण्ड, गले हुए तांबे के ढेर, सीपी की बनी हुई पत्री, अंतिम स्तर पर बिखरे हुए एवं कुएं से प्राप्त नर कंकाल, घोड़े के दांत एवं गीली मिट्टी पर कपड़े के साक्ष्य मिले हैं |

3.कालीबंगा

- राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित इस प्राक् हड़प्पा पुरास्थल की खोज सर्वप्रथम ए० घोष ने 1953 में की |
- कालीबंगा में प्राक् सैन्धव संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि एक जुते हुए खेत का साक्ष्य है |
- कालीबंगा में किलेबंद पश्चिमी टीले के दो पृथक-पृथक परस्पर संबद्ध खंड है - एक सम्भवत: जनसंख्या के विशिष्ट वर्ग कर निवास के लिए और दुसरे अनेक ऊंचे-ऊंचे चबूतरों के लिए जिसके शिखर पर हवन कुण्डों के अस्तित्व का साक्ष्य मिलता है | इस स्थल के पश्चिम में कब्रिस्तान है |
- कालीबंगा के पूर्वी टीले की योजना से मिलती-जुलती है परन्तु इन दोनों में अंतर यह है कि कालीबंगा के घर कच्ची ईटों के बने थे इसके विपरीत मोहनजोदड़ो के घर अधिकाशत: पक्की ईटों के थे |
- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलू या शहरी जल निकासी प्रणाली भी नहीं थी |
- यहाँ पर प्राक् हड़प्पा एवं हड़प्पा कालीन संस्कृतियों के अवशेष मिले है यहाँ से प्राप्त कुछ मृदभांड परवर्ती हड़प्पा सांस्कृतिक युग में भी प्रयुक्त किए जाते रहे | यहाँ किए गये उत्खन्नों से हड़प्पा कालीन सांस्कृतिक युग के पाँच स्तरों का पता चला है |
- सेलखड़ी की मुहरे एवं मिट्टी की छोटी मोगरे महत्वपूर्ण अभिलिखित वस्तुएं थीं जिनके वर्ण हड़प्पा कालीन लिपि के समान है |
- यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख है - बेल्नकर मुहरें, हल के निशान, ईटों से निर्मित चुबतरे, हवन कुण्ड या अग्निकुंड अन्नागार, अंलकृत ईटों का प्रयोग, घरों के निर्मिण में कच्ची ईटों का प्रयोग, युगल तथा प्रतीकात्मक समाधिया आदि |
- कालीबंगामें शवों के अंत्येष्टि संस्कार हेतु तीन विधियों- पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण एवं दाह संस्कार के प्रमाण मिले है |

4.लोथल

- अहमदाबाद जिले के सरगवाला ग्राम से 80 कि०मी० दक्षिण में भोगवां नदी के तट किनारे स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज डा० एस० आर० राव ने 1957 में की थी |
- सागर तट पर स्थित यह स्थल पश्चिमी एशिया से व्यापार का प्रमुख बंदरगाह था |
- लोथल से मिले एक मकान का दरवाजा गली की ओर न खुल कर सड़क की ओर खुला था |
- उत्खननों से लोथल की जो नगर योजना और अन्य भौतिक वस्तुएं प्रकाश में आई है उनसे लोथल एक 'लघु हड़प्पा' या 'मोहनजोदड़ो' नगर प्रतीत होता है |
- फारस की मुद्रा या सील और पक्के रंग में रंगे हुए पात्रों कि उपलब्धि से स्पष्ट है कि लोथल सिन्धु सभ्यता काल में सामुद्रिक व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र था |
- लोथल में गढ़ी और नगर दोनों रक्षा प्राचीर से घिरे है | यहाँ नगर के उत्तर में एक बाजार और दक्षिण में औद्योगिक क्षेत्र था | यहाँ के बाजार में शंख का कार्य करने वाले दस्तकारों और ताम्र कर्मियों के कारखाने थे |
- लोथल की सबसे प्रमुख उपलब्धि जहाजों की गोदी है | यह लोथल के पूर्वी खंड में पक्की ईटों का एक तालाब जैसा घेरा था |
- यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख है- बंदरगाह, धान और बाजरे का साक्ष्य, फारस की मुहर, घोड़े की लघु मृण्मूर्ति, तीन ग्युल समाधियाँ आदि |
- यहाँ की सर्वाधिक प्रसिद्ध उपलब्धि हड़प्पा कालीन बन्दरगाह के अतिरिक्त मृदभांड, उपकरण, मुहरें, वाट एवं माप तथा पाषाण उपकरण है |

5.धौलावीरा

- गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊतालुक में स्थित धौलावीरा आज एक साधारण गाँव है।इस की खोज (1990-91) में आर०एस०विष्ट ने की।
- धौलावीरा वर्तमान भारत में खोजे गये हड़प्पाकालीन दो विशालतम्नगरों में से एक है इस श्रेणी में दूसरा विशालतनगरहरियाणा में स्थित राखीगढ़ी है।
- धौलावीरा भारतीय उपमहाद्वीप का चौथा विशालतहड़प्पाकालीन नगरहै।इस आकार के तीन अन्य नगर है - मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं बहावल पुर में गनेड़ीवाल।
- धौलावीरा में अभी कुछ ही समय पूर्व की गई खुदाई से एक अन्य विशाल एवं भव्य हड़प्पाकालीन नगर के अवशेष मिले हैं इस नगर की विशाल ताकापता व्यापक दुर्गबन्दी या सुरक्षा व्यवस्था से युक्त प्रभावशाली नगरयोजना, सुन्दर जल प्रणाली

तथा 1000 वर्ष अधिक समय तक स्थायी रहने वाली क्रमिक बस्तियों के एक लम्बे चरण से लगा है।

- धौलावीरा की अनेक अद्‌वितीय विशेषताएं हैं जो किसी भी अन्य हड़प्पाकालीन स्थल से नहीं पाई गई हैं।
- अन्य हड़प्पाकालीन नगर दो भागों (1) 'किला' या नगर दुर्ग और (2) निचले नगर में विभाजित थे।किन्तु इन से भिन्न धौलावीरा तीन भागों में विभाजित तथा, जिन में से दो भाग आयताकार दुर्गबन्दी या प्राचीरों द्‌वारा पूरी तरह सुरक्षित थे। ऐसी नगर योजना अन्य हड़प्पाकालीन नगरों में देखने को नहीं मिलती है।
- आर०एस०विष्ट के अनुसार धौलावीरा की जनसंख्या लगभग 20,000 थी।
- किसी भी सिन्धु सभ्यता कालीन नगर में कही भी अन्य 'परकोटेदार' अथवा पर कोटे रहित भागों को जोड़ते हुए एक समान 'परिधीयक्षेत्र' की व्यवस्था नहीं मिलतीं।
- धौलावीरा के मध्य या केंद्र में स्थित प्राचीरों युक्तक्षेत्र, जिसे 'मध्यमा' आवास के लिए प्रयुक्त किया जाता होगा। 'मध्यनगर' या मध्यमा केवल धौलावीरा में ही पाया गयाहै।

6.बनवाली

- हरियाणा के हिसार जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज आर० एस० विष्ट ने में की थी बी 1973| यहाँ कालीबंगा की तरह दो सांस्कृतिक अवस्थाओंप्राक् हड़प्पा एवं हड़प्पा - कालीन के दर्शन होते है|
- बनवाली में जल निकासी प्रणाली, जो सिन्धु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी का अभाव है |
- बनवाली से प्राप्त भौतिक अवशेष काफी समृद्ध है यहाँ से सिन्धुट्कालीन मि-टी के उत्कृष्ट बर्तन, सेलखड़ी की अनेक मोहरे और सिन्धु सभ्यता कालीन विशिष्ट लिपि के युक्त मिट्टी की पकाई गई कुछ मुहरे मिली है |
- यहाँ से प्राप्त कुछ अवशेष प्रमुख हैहल की आकृति -, तिल, सरसों का ढेर, अच्छे किस्म के जौ, सड़कों, नालियों के अवशेष, मनके, मातृदेवी की लघुमृण्मुर्तियाँ, तांबे के बाणाग्र, मनुष्यों एवं पशुओं की मुर्तियाँ, चर्ट के फलक, सेलखड़ी एवं पकाई मिट्टी की मुहरे आदि |

7.चन्हूदड़ो

- मोहनजोदड़ो से 80 मील दक्षिण स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज 1931 ई. में एम. जी. मजूमदार ने की थी | 1935 में इसका उत्खन्न मैके ने किया |
- यहाँ सैन्धव संस्कृति के अतिरिक्त प्राक् हड़प्पा संस्कृति जिसे झूकर संस्कृति और झांगर संस्कृति कहते है, के अवशेष मिले हैं |

- यहाँ के निवासी कुशल कारीगर थे | इसकी पुष्टि इस बात से की जाती है कि यह मनके, सीप, अस्थि, तथा मुद्रा बनाने का प्रमुख केंद्र था |
- यहाँ से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख है – अलंकृत हाथी, खिलौना, एवं कुत्ते के बिल्ली का पीछा करते पद-चिन्ह, सौन्दर्य प्रसाधनों में प्रयुक्त लिपिस्टिक आदि |
- चन्हुदड़ो एक मात्र पुरास्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं |
- चन्हुदड़ो में किसी दुर्ग का अस्तित्वनहीं मिला है | यहाँ से 'झुकर-झांगर' सांस्कृतिक अवशेष मिले है

8.सुरकोटदा

- गुजरात के कच्छ जिले में स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज जगपति जोशी ने 1964 में की यह स्थल सैन्धव संस्कृति के पतन काल की दृष्टिगत करता है |
- सुरकोटदा एक महत्वपूर्ण प्राचीर युक्त सिन्धु कालीन महत्वपूर्ण बस्ती है |
- इस स्थल के अंतिम स्तर पर घोड़े की अस्थियाँ मिली है जो किसी भी अन्य हड़प्पा कालीन स्थल से प्राप्त नहीं हुई है |
- यहाँ के अवशेषों में प्रमुख है-घोड़े की अस्थियाँ एवं एक विशेष प्रकार का कब्रगाह |

9.अन्य महत्वपूर्ण तथ्य:-

- **मुंडीगाक** नाम कह हड़प्पाकालीन पुरास्थल अफग निस्तान में स्थित है।
- **माँडा-**पीर पंजाल पर्वत माला की तराई में चिनाव नदी के दांये तट पर स्थित इस स्थल में की गई खुदाई से हड़प्पा और ऐतिहासिक युग से सम्बन्धित संस्कृति का त्रि-स्तरीय क्रम प्राप्त हुआ है।
- प्रागैतिहासिक काल में मांडा एक छोटी हड़प्पाकालीन बस्ती थी।यहाँ से विशेष प्रकार के मृदभाण्ड, टेरीकोटा के आदि प्राप्त हुई है।
- **रोपड़-**पंजाब के सतलुज नदी के तट पर स्थित इस स्थल की खोज (1955-56) मेंय शर्मा ने की।
- यहाँ पर की गई खुदाइयों से संस्कृति के पांचस्तरीय क्रम (हड़प्पा, पेंटेड, ग्रेबेअर-चित्रित धूसर मृदभाण्ड, नार्दनब्लैकपालिशु-उत्तरी काली पालिश वाले, कुषाण, गुप्त और मध्यकालीन मृदभाण्ड) प्राप्त हुए हैं।
- मानवीय शवाधान या कब्र के नीचे एक कुत्ते का शवाधान बड़ा रोचक है। ऐसा दृष्टान्त किसी भी हड़प्पाकालीन स्थल से में प्राप्त नहीं हुआ है। परन्तुइस प्रकार की प्रथा पाषाण युग में बुर्जाहोम में प्रचलितथी।

- आलगीरपुर उ०प्र० के मेरठ जिले में स्थित आलगीरपुर सहायक हिण्डन नदी के बायें तट पर स्थित है, यह हड़प्पा सभ्यता का सर्वाधिक पूर्वी पुरास्थलहै।
- इस पुरा स्थल की खोज में 'भारत सेवकसमाज' संस्था का विशेष योगदान रहा।

1.नगर नियोजन

- हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रभावशाली विशेषता उसकी नगर नियोजन एवं जल निकास प्रणाली है ।यह नगर योजना जाल पद्धति पर आधारित है।
- प्राप्त नगरों के अवशेषों से पूर्व एवं पश्चिम दिशा में दो टीले हैं।पूर्वदिशा में स्थित टीले पर नगर या फिर आवास क्षेत्र के साक्ष्य मिलते हैं।पश्चिम केटीले पर गढ़ी अथवा दुर्ग के साक्ष्य मिले हैं।
- लोथल एवं सुरकोटता के दुर्ग और नगर क्षेत्र दोनों एक ही रक्षा प्रचीर से घिरेहैं।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा की नगरयोजना एक समान थी किन्तु कालीबंगा में सुव्यवस्थित जल निकास प्रणाली न होने एवं कच्ची ईंटों के मकान बने होने के कारण यहदीन बस्ती प्रतीत होती हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के किसी भी पुरास्थल से किसी भी मन्दिर के अवशेष नहीं मिलें के मोहनजोदड़ो ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ से एक स्तूप का अवशेष मिला है यद्यपि से कुषाणकालीन माना गयाहै।
- हड़प्पाकालीननगरों के चारों ओर प्राचीर बनाकर किलेबन्दीकर ने का उद्देश्य नगर की शत्रुओं के प्रबल आक्रमणों सेरक्षा करनानहींथा, अपितुलुटेरों मार्ग उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर जाते हैं तथासड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती हुई जालसी प्रतीतहोती थीं।
- कालीबंगा में निर्मित सड़कों एवं गलियों को एक समानुपातिक ढंग से बनाया गयाथा।
- नगर की प्रमुख सड़क को प्रथम सड़क कहा गयाहै।आमतौर पर नगरों में प्रवेश पूर्वी सड़क से होता था और जहाँ यह प्रथम सड़क से मिलती थी उसे आक्सफोर्ड सर्कस कहा गया है।सड़के मिट्टी की बनी होतीहैं।
- नालियाँ- जल निकास प्रणाली सिन्धु सभ्यता की अद्वितीय विशेषता थी जो हमें अन्य किसी भी समकालीन सभ्यता में नहीं प्राप्त होतीं|
- नालियाँ ईंटों या पत्थरों से ढकी होतीं थी| इनके निर्माण में मुख्यत; ईंटों और मोर्टार का प्रयोग किया जाता था पर कभी-कभी चुने और जिप्सम का प्रयोग भी किया जाता था|
- घरों से जल निकासी मोरियों द्वारा होता था जो मुख्य नालियों में गिरती थी|

- मोहनजोदड़ो की जल निकास प्रणाली अद्भुत थी तथा हडप्पा की निकास प्रणाली तो और भी विलक्षण थी
- कालीबंगा के अनेक घरों में अपने-अपने कुएँ थे |
- ईंटे- हडप्पा, मोहनजोदड़ो और अन्य प्रमुख नगर पकाई गई ईंटों से पूर्णत: बने थे, जबकि कालीबंगा व् रंगपुर नगर कच्ची ईंटों के बने थे |
- सभी प्रकार के ईंटों की एक विशेषता थी | वे एक निश्चित अनुपात में बने थे और अधिकाशंत: आयताकार थे, जिनकी लम्बाई उनकी चौड़ाई की दूनी तथा ऊंचाई या मोटाई चौड़ाई की आधी थी | अर्थात् लंबाई चौड़ाई तथा मोटाई का अनुपात 4:2:1 था |
- सामान्यत: एक ईट का आकर 10.25× 5.0 × 2.25 इंच था | बड़े ईंटों का प्रयोग नालियों को ढकने में किया जाता था |
- मोहनजोदड़ो से मिली हडप्पा सभ्यता की सबसे बड़ी ईंट 51cm.×26.27cm.×6.35 के आकर की थी |
- दीवार की फर्शो के कोने या किनारे बनाने के लिए एल(L) आकर की ईंटों का तथा स्नानागार की फर्श बनाने के लिए जलरोधी छोटी ईंटों का प्रयोग किया जाता था |
- भवन- हड़प्पा कालीन नगरों के भवन तीन श्रेणियों में विभाजित किये जा सकते हैं - (1) आवासीय भवन,(2) विशाल भवन और (3) सार्वजनिक स्नानगृह और अन्नागार आदि |
- मकानों का निर्माण सादगीपूर्ण किया गया था | उनमें एकरुपता थी | कालीबंगा के कुछ मकान की फर्श में ईंटों का प्रयोग किया गया है |
- प्रत्येक मकान में एक आँगन एक रसोईघर तथा एक स्नानगार बना होता था | घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर न खुलकर पिछवाड़े की ओर खुलते थे
- सामान्यत: मकान छोटे होते थे न जिनमें चार-पाँच कमरे होते थे | कुछ बड़े आकर के भवन भी मिले हैं जिनमें 30 कमरे तक बने होते थे तथा दो मंजिले भवनों का भी निर्माण हुआ था |

प्रत्येक मकान से ढकी हुई नालियाँ भी होती थी |

2.आर्थिक जीवन

- हड़प्पा कालीन अर्थव्यवस्था सिंचित कृषि अधिशेष पुशपालन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आन्तरिक और विदेश व्यापार पर आधारित थी।
- कृषि - सिन्धु घाटी कृषि के लोग बाढ़ उत्तर जाने पर नवंबर के महीने में बाढ़ वाले मैदानों में बीज बो देते थे और अप्रैल महीने में गेहूँ और जौ की फसल काट लेते थे।
- सैन्धव सभ्यता में कोई फावड़ा या फाल नहीं मिला है परन्तु कालीबंगा में हड़प्पा-पूर्व अवस्था में कृड़ो से (हल रेखा)गायन होता हैं कि हड़प्पा काल में राजस्थान के खेतों में हल जोते जाते थे।
- हड़प्पाई लोग शायद लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे । फसल काटने के लिए पत्थर के हँसियों का प्रयोग होता था।

- नौ प्रकार के फसलों की पहचान की गई है - चावल(गुजरात एवं राजस्थान), गेहूँ (तीन किस्में), जौ (दो किस्में), खजूर, तरबूज़, मटर, राई, तिल आदि। किन्तु सैन्धव सभ्यता के प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ और जौ थे।
- मोहनजोदड़ो हड़प्पा एवं कालीबंगा में अनाज बड़े-बड़े कोठारो में जमा किया जाता था ।
- संभवतः किसानों से राजस्व के रूप में अनाज लिया जाता था । लोथल के लोग 1800 ई० पू० में भी चावल का प्रयोग करते थे (यहाँ चावल के अवशेष प्राप्त हुए हैं) ।
- सर्वप्रथम कपास उत्पन्न करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को था इसीलिए यूनानियों ने इसे सिंडोन जिसकी उत्पत्ति सिन्ध से हुई है नाम दिया है।
- पुशपालन- हड़प्पाई लोग बैल, भेड़, बकरी, सुअर आदि थे ।
- ऐसी कोई मूर्ति नहीं मिली है जिस पर गाय की आकृति खुदी हो। कूबड़ वाला सांड़ इस संस्कृति में विशेष महत्व रखता है।
- घोड़े के अस्तित्व का संकेत मोहनजोदड़ो की ऊपरी सतह से तथा लोथल में। एक। सन्दिग्ध मूर्तिका से मिला है।
- गुजरात के सुरकोटदा नामक से घोड़े के अस्थिपंजर के जो अवशेष मिले हैं वे 2000 ई० पू० के आसपास के हैं। जो भी हो इतना तो स्पष्ट है कि हड़प्पा काल में इस पशु के प्रयोग का आम प्रचलन नहीं था।
- गुजरात के निवासी हाथी पालते थे।
- शिल्प एवं तकनीक - सैन्धव लोग पत्थर के अनेक प्रकार के औजार प्रयोग करते थे। ताँबे के साथ औजार बहुतायत से नहीं मिलते हैं।
- हड़प्पा समाज के शिल्पियों में कसेरों के समुदाय का महत्वपूर्ण स्थान था।
- ताँबा राजस्थान के खेतड़ी से टिन, अफगानिस्तान से सोना, चाँदी भी सम्भवत: अफगानिस्तान से ताँबा, रत्न दक्षिण भारत से मंगाये जाते थे।
- इस काल में कुम्हार के चाक का खूब प्रचलन था और हड़प्पाई लोगों के मृदभाण्डों की अपनी खास विशेषताएं थीं । ये भाण्डों को चिकने और चमकीले बनाते थे।
- मोहनजोदड़ो के किसी बर्तन पर लेख नहीं मिलता परन्तु हड़प्पा के बर्तनों पर मानव आकृतियों भी दिखाई देती हैं ।

3.राजनीतिक व्यवस्था

- हड़प्पा संस्कृति की व्यापकता एवं विकास को देखने से ऐसा लगता है कि यह सभ्यता किसी केन्द्रीय शक्ति से संचालित होती थी |
- हड़प्पाकालीन राजनीतिक व्यवस्था के वास्तविक स्वरूप के बारे में हमें कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है चूँकि हड़प्पावासी वाणिज्य की ओर अधिक आकर्षित थे इसलिए ऐसा माना जाता है कि सम्भवतः हड़प्पा सभ्यता का शासन वणिक वर्ग के हाथ में ही था |

- ह्वीलर ने सिन्धु प्रदेश के लोगों शासन को माध्यम वर्गीय जनतन्त्रात्मक शासन खा और उसमें धर्म की महत्ता को स्वीकार किया |

4.सामाजिक व्यवस्था

- समाज की इकाई परम्परागत तौर पर परिवार थी | मातृदेवी की पूजा तथा मुहरों पर अंकित चित्र से यह परिलक्षित होता है | हड़प्पा समाज सभ्यता: मातृसत्तात्मक था |
- नगर नियोजन दुर्ग, मकानों ले आकर व रुपरेखा तथा शवों के दफनाने के ढंग को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सैन्धव समाज अनेक वर्गो जैसे पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, जुलाहे एवं श्रमिकों में विभाजित रहा होगा |
- सैन्धव सभ्यता के लोग युद्ध प्रिय कम शांतिप्रिय अधिक थे |
- सिन्धु सभ्यता के निवासी शाकाहारी एवं मांसहारी दोनों थे | भोज्य पदार्थो में गेहूँ, जौ, तिल, सरसों, खजूर, तरबूज, गाय, सूअर, बकरी का मांस, मछली, घड़ियाल कछुआ आदि का मांस प्रमुख रूप से खाएं जाते थे |
- वस्त सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के पहने जाते थे आभषणों का प्रयोग पुरुष एवं महिलाएं दोनों करते थे |
- मनोरंजन के लिए पासे का खेल, नृत्य, शिकार, पशुओं की लड़ाई आदि प्रमुख साधन थे | धार्मिक उत्सव एवं समारोह भी समय-समय पर धूमधाम से मनाये जाते थे |
- शवों की अन्त्येष्टि संस्कार में तीन प्रकार के शावोत्सर्ग के प्रमाण मिले है-
  1. **पूर्ण समाधिकरण** में सम्पूर्ण शव को भूमि में दफना दिया जाता था |
  2. **आंशिक समाधिकरण** में पशु पक्षियों के खाने के बाद बचे शेष भाग को भूमि में दफना दिया जाता था |
  3. **दाह संस्कार**

5.धार्मिक जीवन

- **पुरास्थलों** से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों, पत्थर की छोटी मूर्तियों, मुहरों, पत्थर निर्मित लिंग एवं योनियों, मृदभाण्ड पर चित्रित चिन्हों से यह परिलक्षित होता है कि धार्मिक विचार धारा मातृदेवी, पुरुषदेवता, लिंग योनी, वृक्ष प्रतीक,पशु जल आदि की पूजा की जाती थी |
- **मोहनजोदड़ो** से प्राप्त एक सील पर तीन मुख वाला पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है | उसके सर पर तीन सिंग है उसके बांयी ओर एक गौडा और भैसा तथा दायीं ओर एक हाथी एक व्याघ्र एवं हिरण है | इसे पशुपति शिव का रूप माना जाता है मार्शल ने इन्हें 'आद्यशिव' बताया |
- हड़प्पा में पकी मिट्टी की स्त्री-मुर्तिकाएं भारी संख्या में मिली है | एक मुर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया यह सम्भवतः पृथ्वी देवी की प्रतिमा है हड़प्पा सभ्यता के लोग धरती की उर्वरता की देवी मानकर इसकी पूजा करते है |

- हड़प्पा सभ्यता से स्वास्तिक, चक्र और क्रास के भी साक्ष्य मिलते है स्वास्तिक और चक्र सूर्य पूजा का प्रतीक था |
- धार्मिक दृष्टिकोण का आधार इहलौकिक तथा व्यावहारिक अधिक था | मूर्तिपूजा का आरम्भ सम्भवत: सैन्धव से होता है |

6.व्यापार

- सिन्धु सभ्यता के लोगों के जीवन में व्यापार का बड़ा महत्व था | इनकी पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, तथा लोथल में अनाज के बड़े-बड़े कोठारों तथा ढेर सारी सीलों एक रूप लिपि और मानकीकृत माप-तौलों के अस्तित्व से होती है |
- हड़प्पाई लोग व्यापर में धातु के सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे, सभी आदान-प्रदान वस्तु विनियम द्वारा करते थे |
- स्थलीय व्यापर में अफगानिस्तान तथा ईरान तथा जलीय व्यापर में मकरान के नगरों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती थी | भरीं द्वीप के व्यापारी दोनों देशों के बिच बिचौलियों का काम किया करते थे |
- मोहनजोदड़ो की एक मुहर पर एक ठीकरे के ऊपर सुमेरियन ढंग की नावों के चित्र अंकित है |
- सुमेरियन लेखों से ज्ञात होता है कि उन नगरों के व्यापारी 'मेलुहा' के व्यापारियों के साथ वस्तु विनियम करते थे | 'मेलुहा' का समीकरण सिंध प्रदेश से किया गया है |
- लोथल से फारस की मुहरे तथा कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें भी सिन्धु सभ्यता के व्यापर के साक्ष्य प्रस्तुत करते है |
- सिन्धु तथा मेसोपोटामिया दोनों सभ्यताओं में मातृ शक्ति की उपासना होती थी तथा दोनों के निवासी बैल, बतख, पाषाण स्तम्भ को पवित्र मानते थे |
- सैन्धव सभ्यता की समृद्धि का प्रमुख कारण उसका विदेशी व्यापर था |
- सिंध प्रदेश एवं ईरान के बिच विनियम की कड़ी व्यापारिक मण्डी फारस की खाड़ी में बहरीन द्वीप में थी |

- सिन्धु लिपि में लगभग 64 मूल चिन्ह एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं जो सेलखेड़ी की आयताकार मुहरों, ताँबे की गुरिकाओं आदि पर मिलते हैं। लेखन प्रणाली साधारणत : अक्षर सूचक मानी गई है |
- हड़प्पा लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 में मिला था और 1923 तक पूरी लिपि प्रकाश में आ गई, किन्तु अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी हैं।
- हड़प्पा लिपि भावचित्रात्मक है और उनकी लिखावट क्रमशः दायीं ओर से बायीं की जाती थी।

- अधिकांश अभिलेख मृण्मुद्राओं(सिलो) पर है इन सीलों का प्रयोग धनाढ्य लोग अपनी निजी सम्पत्ति को चिन्हित करने और पहचानने के लिए करते होंगे।
  - सैन्धव लिपि मूल रुप से देशी है और उसका पश्चिम एशिया की लिपियों से कोई सम्बन्ध नहीं है।
  - बॉट-माप - तौल की इकाई सम्भवत: 16 के अनुपात में थी। उदाहरण 16, 64, 160, 320, 640 आदि।
  - ये बॉट घनाकार, बर्तलाकार, बेलनाकार एवं शंक्वाकार आकृति के थे।
  - मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ तथा लोथल से हाथी दाँत का बना हुआ एक-एक पैमाना मिला है। इसका प्रयोग सम्भवत: लम्बाई मापने में किया जाता रहा होगा।
  - मृदभाण्ड- हड़प्पा भाण्डों पर आमतौर से वृत्त या वृक्ष की आकृतियाँ मिलती है । कुछ ठीकरों पर मनुष्य की आकृतियाँ भी दिखाई देती है।
  - मुहरें - हड़प्पा संस्कृति की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ है । उसकी मेहरे । अब तक लगभग 2000 मुहरे प्राप्त हुई है | इनमें से अधिकांश मुहरे लगभग 500 मोहनजोदड़ो से मिली है।
  - अधिकांश मुहरों लघु लेखों के साथ- साथ एक सिंगी सांड़, भैस, बाघ, बकरी और हाथी की आकृतियाँ खोदी गई हैं।
  - मुहरों के बनाने में सर्वाधिक उपयोग सेलखेड़ी का किया गया है।
  - लोथल और देसलपुर से ताँबे की बनी मुहरें प्राप्त हुई है। सैन्धव मुहरें वेलनाकार, वर्गाकार, आयताकार एवं वृत्ताकार है।
  - कुछ मुहरों पर देवी-देवताओं की आकृतियों के चित्रित होने से यह अनुमान लगाया है कि सम्भवत: इनका धार्मिक महत्व भी रहा होगा।
  - वर्गाकार मुद्राएं सर्वाधिक प्रचलित थी ।
  - मोहनजोदड़ो, लोथल तथा कालीबंगा से राजमुद्रांक भी मिले हैं इससे व्यापारिक क्रियाकलापों का ज्ञान होता हैं।
  - लघु मृण्मुर्तियाँ- सिन्धु प्रदेश में भारी संख्या में आग में पकी मिट्टी(जो टेराकोटा कहलाती है) की बनी मूर्तिकाएं (फिगरिन) मिली है । इनका प्रयोग या तो खिलौने के रुप में या पूज्य प्रतिमाओं के रुप में होता था इनमें कुत्ते, भेड़, गाय, बन्दर की प्रतिकृतियाँ मिलते है।
  - यद्यपि नर और नारी दोनों की मृण्मूर्तियाँ मिली है तथापि नारी मृण्मूर्तियाँ संख्या में अधिक है |
  - प्रस्तर शिल्प में हड़प्पा संस्कृति पिछड़ी हुई थी |

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हड़प्पा संस्कृति का अस्तित्व मोटे तोरे पर 2500 ई०पू० से 1800 ई०पू० के बीच रहा |
- हड़प्पा पूर्व बस्तियों के अवशेष पाकिस्तान के निचले सिन्ध और बलूचिस्तान प्रान्त में तथा राजस्थान के कालीबंगा में

मिले है | हड़प्पा पूर्व किसान उत्तर गुजरात के नागवाडा में भी रहते थे |

- सिन्धु सभ्यता के मकान आयताकार थे |
- हड़प्पा संस्कृति की नगरिकोत्तर अवस्था को उपसिन्धु संस्कृति भी कहते है | इसका उत्तर हड़प्पा संस्कृति नाम और भी अधिक प्रचलित है |(काल 1800 ई०पू० से 1200 ई०पू०)
- उत्तर हड़प्पा संस्कृतियाँ मूलतः ग्रामीण सभ्यता एवं ताम्र पाषाणिक थी |
- पकाई हुई ईंटे हरियाणा के भगवानपुरा में उत्तर हड़प्पाई अवस्था में मिली है, पर इसके सिवा और कहीं नहीं पाई गई है |
- स्वात घटी को उत्तर हड़प्पा संस्कृति का उत्तरी छोर माना जाता है |
- हडप्पातोत्तर काल के लोग काला धूसर ओपदार मृदभाण्ड का प्रयोग करते थे |
- रागी भारत के किसी भी हड़प्पा स्थल में अभी तक नही देखा गया है | आलमगीरपुर में उत्तर हड़प्पाई लोग कपास भी उपजाते थे |
- आमतौर से सभी उत्तर हड़प्पाई स्थलों में मानव मुर्तिकाओं और वैशिष्ट्य सूचक चित्राकृतियों का आभाव है |

पतन

- हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की भाँति ही उसके विघटन का प्रश्न भी एक जटिल समस्या है |
- इसके परवर्ती चरण में 2000 से 1700 ई०पू० के बीच किसी समय हड़प्पा कालीन सभ्यता का स्वतंत्र अस्तित्व धीरे-धीरे विलुप्त हो गया |
- इस सभ्यता के पतनोन्मुख ओर अंतत: विलुप्त हो जाने के अनेक कारण है जो निम्नलिखित है -

1. बाह्य आक्रमण
2. भूतात्विक परिवर्तन
3. जलवायु परिवर्तन
4. विदेशी व्यापर में गतिरोध
5. साधनों का तीव्रता से उपभोग
6. बाढ़ एवं अन्य प्राकृतिक आपदा
7. प्रशासनिक शिथिलता

वैदिक सभ्यता

आर्यों के निवांस स्थान

- बाल गंगाधर तिलक आर्यों का निवांस स्थान उत्तरी ध्रुव मानते हैं तो दयानंद सरस्वती अपनी पुस्तको सत्यार्थ प्रकाश में आर्यों का निवांस स्थान तिब्बत कहते हैं|
- राजवली पाण्डेय मध्य देश को, डॉ. अविनाश दास सप्त सैन्धव को, गार्डन चाइल्ड दक्षिणी रूस को आर्यों का निवांस स्थान मानते हैं|

- सामान्य मत है कि आर्य मध्य एशिया एवं यूरेशिया के क्षेत्र के निवांसी हैं|

वैदिक साहित्य

- वैदिक साहित्य के अंतर्गत चारो वेद, ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद को रखा गया है|
- ऋग्वेद - इस 1028 सूक्त है जो 10 मण्डल में विभक्त है 2 से 7 तक पुराने मण्डल है दूसरा और सातवाँ मण्डल सर्वाधिक पुराना है| प्रथम और दसवाँ मंडल बाद में जोड़ा गया है| नौवाँ मण्डल सोम्र के प्रति समर्पित है| प्रत्येक मंडल कि रचना अलग-अलाग ऋषि द्वारा की गयी है|
- ऋग्वेद से सबंम्धित पुरोहित को होतृ कहा जाता था|

यजुर्वेद

- यजुर्वेदमें यज्ञ कर्मकाण्डों और इसको संपादित करने कि विधि की चर्चा है| इसके पुरोहित अध्वर्यु कहलाते है|
- **सामवेद**
- यह ग्रन्थ गान प्रधान है इस कूल 1810 मन्त्र हैं जिसमें 75 नये श्लोक है बाकी ऋग्वेद में पाए गये है इसको गायन करने वांले पुरोहित को उद्गात्री कहा जाता था|

अथर्ववेद

- इस कुल 731 सूक्त है| 5849 मंत्र तथा 20 काण्ड हैं| इस लोकिक जीवन, जादूटोना, भूतप्रेत, गृह शुख, जड़ी बूटी, इत्यादि का वर्णन किया गया है |
- अर्थर्ववेद से जुड़े पुरोहित को ब्रह्म कहा जाता था|

ब्राह्मण ग्रन्थ

- वेदों की सही व्याख्या करने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना की गयी| प्रत्येक वेड के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं|

आरण्यक ग्रन्थ

- इसका अर्थ वन या जंगल होता है आरण्यक ग्रन्थ की रचना जंगल में हुई |इसमें कर्मकाड से मार्ग की ओर सकम्रण की विवेचना की गई प्रत्यके वेद के अलग अलग आरण्यक ग्रन्थ है | सिर्फ अथर्ववेद के कोई आरण्यक ग्रन्थ नही है

उपनिषद

- इसमें दार्शनिक विचारो का संग्रह है इसलिए इसे वेदों का सार कहा जाता है सत्यमेंव जयते शब्द मुण्डकोपनिषद से लिया है

आयो के भोगोलिक विस्तार

- ऋग्वेद में सर्वाधिक उलेखित नदि सिनधु है जबकि सबसे अधिक महत्व सरस्वती नदी का था | ऋग्वेद मेंमंगा का एक बार यमुना का तीन बार वर्णन आया है |

ऋग्वेद आर्य

राजनीतिक व्यवस्था

- ऋग्वेद में दसराज युद्ध का वर्णन है जो भरत जन के राजा सुदास और दस राजाओ के संघ के बीच हुआ था यह युद्ध रावीं नदी के तट पर हुआ था इसमें सुदास विजयी रहा|
- ऋग्वेद में जन का 275 बार और विश का 170 बार का उल्लेख आया है |
- राजा की सहायता करने के लिए सभा, समिति एवं विदथ नामक सस्था थी |
- ऋग्वैदिक काल में कर के रूप में बलि लिया जाता था लेकिन उसे जनता अपनी इच्छानुसार देती थी |

सामाजिक व्यवस्था

- ऋग्वैदिक समाज कबीलाई प्रवृति का था | जिसका मुख्य पेशा पुशपालन था | कृषि इनका दुसरा पेशा था
- ऋग्वैदिक समाज दो वर्णो में विभाजित था एक श्वेत और दुसरा अश्वेत ।ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के पुरूष सूक्त में वर्ण के रूप में शुद्र की चर्चा की गई है
- ऋग्वैदिक समाज का मूल आधार परिवांर था जो पितृसतात्मक था समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी लोषा, धोषा अपाला,विशवांरा जैसी वेदों की ऋचाओ की रचयिता है|
- आर्य शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों तरह के भोजन करते थे लेकिन ऋगवेद आर्य मछली एवं नमक से परिचित नही थे |

आर्थिक व्यवस्था

- ऋग्वेद आर्यो का प्रमुख पेशा पुशपालन था ऋग्वेद मेंगाय का 176 बार उल्लेख आया है आर्यो के जीवन में इसका विशेष महत्व था |
- ऋग्वैदिक आर्यो का कृषि द्वितीय पेशा था ऋग्वेद में मात्र 24 बार कृषि का उल्लेख है ऋग्वेद में एक ही अनाज यव का उल्लेख है |
- ऋग्वेद में विभिन्न प्रकार के दस्तकारो की चर्चा है जैसे बुनकर, कर्मकार,बढ़ई, रथकार इत्यादि
- ऋग्वेद काल में व्यापार होता था जो जलीय एवं स्थलीय दोनों मार्गो से होता था|

धार्मिक व्यवस्था

- ऋग्वैदिक देवताओं में तीन भागो में बांटा गया है

1.पृथ्वी के देवता - सोम,अग्नि,वृहस्पति

2.अंतरिक्ष के देवता - इन्द्र,वांयु

3.आकाश के देवता -सूर्य,मित्र,वरूण

- ऋग्वेद में इन्द्र पर 250 सृकत है यह अत्यंत पराक्रमी और शक्तिशाली देवता थे |
- ऋग्वेद में अग्नि के लिए 200 BC सूकत है यह पुजारियों के देवता थें जो यज्ञ के अनुष्ठान करते है |

उत्तर वैदिक काल

- उत्तर वैदिक कालका समय 1000 BC से 600 BC है | इसी काल मेंप्रसिद्धमहाभारत युद्ध हुआ था | इसी काल में सर्वप्रथम लौहे के प्रयोग के साक्ष्य भी मिले है

राजनीतिक व्यवस्था

- उत्तरवैदिक काल में जन के स्थान पर बडे-बडे जनपद का उद्भव होने लगा | राजा को राजकाज में सहायता देने के लिए सभा समिति का अस्तित्व रहा लेकिन विदथ समाप्त हो गया पूरू एवं भरत मिलकर कुरू जनपद और तुर्वस एवं क्रिवि मिलकर पचाल जनपद बन गए
- राजा बडे-बडे यज्ञ राजसूय यज्ञ,अश्वमेंधयज्ञ एवंवांजपेय यज्ञ का आयोजन करने लगे |
- उत्तर वैदिक काल में बलि एक अनिवांर्य कर के रूप में लिया जाने लगा जो उपज का 16 वाँ भाग होता था |
- राजा की राजकाज में सहायता के लिए कुछ अधिकारी होते थे जिसे रत्निन कहा जाता था इसकी संख्या ग्यारह थी |

आर्थिक व्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल में आर्यो का प्रमुख पेशा कृषि था और पुशपालन उनका दुसरा पेशा था |लोहे के प्रयोग के कारण कृषि में अभूतवर्ण उन्नति हुई अंतरंजीखेडा से 750 BC के प्रयोग के मिले है उत्तर वैदिक कालिन दस्तकारी में बढईगिरी ,चर्मकार,बुनकर. प्रसिद्ध थे लेकिन रथकार की सामाजिक स्थिति इन सबो से अच्छी थी |
- उत्तर वैदिक कालमें व्यापार होता है जो जलीय एवं स्थलीय मागे के साथ-साथ समुद्री मार्ग द्वारा भी होते थे |

सामाजिक व्यवस्था

- उत्तर वैदिक कालिन समाज का आधार परिवांर था जो पितृसत्तात्मक होता था | इस काल में वर्णव्यवस्था पूर्णतः स्थापित हो चुकी थी | इस ब्राहमणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था जबकि शुदों की स्थिति दयनीय थी |
- उस वैदिक काल मेंस्त्रियांकी स्थिति में गिरावट के लक्षण दृष्टिगोचर होते थे |इन्हें पुरूषों के अधीन माना गया है |
- उत्तर वैदिक काल में विवांह के आठ प्रकार का उल्लेख पाया गया है | देव विवांहं,अर्षि विवांह,राक्षस विवांह,प्रजापत्य विवांह,वर्हा विवांह, गधर्व विवांह,असुर विवांह,पिशाच विवांह |
- उत्तर वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था का प्रचलन शुरू हो गया था| ब्रहमाचर्य,गृहस्थ, वांनप्रस्थ और सन्यास|

धार्मिक व्यवस्था

- उत्तर वैदिक काल के धार्मिक व्यवस्था में परिवर्तन से अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा | उत्तर वैदिक काल में प्रजापति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हो गया|
- उत्तर वैदिक कालमें यज्ञीय कर्मकाण्डों के स्थान पर दार्शनिक विचारों का भी अवलोकन किया जाने लगा|

बौद्धधर्म

- छठी शताब्दी ई० पू० में मध्य गंगा की घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ। जिनमें लगभग 62 सम्प्रदायों के बारे में हमें जानकारी मिलती है ।
- इन धार्मिक सम्प्रदायों ने उपनिषदों द्वारा तैयार वैधानिक पृष्ठभूमि के आधार पर पुरातन वैदिक ब्राहमण धर्म के अनेक दोषों पर प्रहार किया इसीलिए इनको सुधार वाले आंदोलन भी कहा गया है।

बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ई० पू० में मध्य गंगा की घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ। जिनमें लगभग 62 सम्प्रदायों के बारे में हमें जानकारी मिलती है ।
- इन धार्मिक सम्प्रदायों ने उपनिषदों द्वारा तैयार वैधानिक पृष्ठभूमि के आधार पर पुरातन वैदिक ब्राहमण धर्म के अनेक दोषों पर प्रहार किया इसीलिए इनको सुधार वाले आंदोलन भी कहा गया है।

गौतम-बुद्ध एक परिचय

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म 563 BC में कपिलवस्तु के शाक्यकूल में लुम्बिनी (नेपाल) में हुआ था

- इनकी माता का नाम महामाया तथा पिता का नाम शुद्धोधन था | जन्म के सातवें दिन माता देहांत हो जाने से सिद्धार्थ का पालन पोषण उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया |
- 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवांह शाक्य कुल की कन्या यशोधरा से हुआ जिनका बौद्ध ग्रथों में अन्य बिम्बा, गोपा, भद्कच्छना मिलता है |
- सिद्धार्थ से यशोधरा को एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिनका नाम राहुल रखा गया |
- सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर ने 29वे वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया | इस त्याग को बौद्ध धर्म में महाभि-निष्क्रमण कहा गया है |
- गृह त्याग के उपरांत सिद्धार्थ अनोमा नदी के तट पर अपने सिर को मुड़वा कर भिक्षुओं का काषाय वस्त्र धारण किया |
- सात वर्ष तक के ज्ञान की खोज में इधर-इधर भटकते रहे | सर्वप्रथम वैशाली के समीप अलार कलाम नामक सन्यासी के आश्रम में आये | इसके उपरांत वे उरुवेला के लिए प्रस्थान किये जहाँ उन्हें कौडिन्य आदि पाँच साधक मिले |
- छ: वर्ष तक अथक परिश्रम एवं घोर तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की एक रात पीपल वृक्ष के निचे निरंजना नदी के तट पर सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ | इसी दिन से वे तथागत हो गये |
- ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए |
- उरुवेला से बुद्ध सारनाथ आये यहाँ पर उन्होंने पाँच ब्राहमण संन्यासियों को अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथो में 'धर्म चक्र-प्रवर्तन' नाम से जाना जाता है बौद्ध संघ में प्रवेश सर्वप्रथम यही से प्रारम्भ हुआ |
- महात्मा बुद्ध ने तपस्स एवं काल्लिक नामक दो शूद्रों को बौद्ध धर्म का सर्वप्रथम अनुयायी बनाया |
- बुद्ध ने अपने जीवन का सर्वाधिक उपदेश कोशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिए | उन्होंने मगध को अपना प्रचार केंद्र बनाया |'
- बुद्ध के प्रसिद्ध अनुयायी शासकों में बिम्बिसार, प्रसेनजित तथा उदयन थे।
- बुद्ध के प्रधान शिष्य उपालि व आनन्द थे। सारनाथ में ही बौद्धसंघ की स्थापना हुई।
- महात्मा बुद्ध अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में हिरण्यवती नदी तट पर स्थित कुशीनारा पहुँचे । जहाँ पर 483 ई० पू० में 80 वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हो गई। इसे बौद्ध परंपरा में महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।
- मृत्यु से पूर्व कुशीनारा के परिव्राजक सभुच्छ को उन्होंने अपना अंतिम उपदेश दिया। महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के अवशेषों को आठ भागों में विभाजित किया गया।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं एवं सिद्धांत

- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं - बुद्ध, धम्म तथा संघ

- बौद्ध धर्म के मूलाधार चार आर्य सत्य है। ये है -(1) दु:ख, (2) दु:ख समुदाय (3) दु:ख निरोध (4) दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा (दु:ख निवारक मार्ग) अर्थात् अष्टांगिक मार्ग।
- दु:ख को हरने वाले तथा तृष्णा का नाश करने वाले अष्टांगिक मार्ग के आठ अंग हैं। जिन्हें मज्झिम प्रतिपदा अर्थात् मध्यम मार्ग भी कहते है।
- अष्टांगिक मार्ग के तीन मुख्य भाग हैं - (1) प्रज्ञा ज्ञान (2) शील तथा (3) समाधि ।
- इन तीन भागों के अन्तर्गत जिन आठ उपायों की प्रस्तावना की गयी है वे निम्न हैं -
  1. सम्यक् दृष्टि
  2. सम्यक् वाणी
  3. सम्यक् आजीव
  4. सम्यक् स्मृति
  5. सम्यक् संकल्प
  6. सम्यक् कर्मान्त
  7. सम्यक् व्यायाम
  8. सम्यक् समाधि
- अष्टांगिक मार्ग को भिक्षुओं का 'कल्याण मित्र' कहा गया ।
- बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है - निर्वाण प्राप्ति । निर्वाण का अर्थ हैं दीपक का बुझ जाना अर्थात् जीवन मरण चक्र से मुक्त हो जाना । यह निर्वाण इसी जन्म से प्राप्त हो सकता है, किन्तु महापरिनिर्वाण मृत्यु के बाद ही संभव है ।
- बुद्ध ने दस शीलों के अनुशीलन को नैतिक जीवन का आधार बनाया है।
- जिस प्रकार दु:ख समुदाय का कारण जन्म है उसी तरह जन्म का कारण अज्ञानता का चक्र। हैं। इस अज्ञान रुपी चक्र को 'प्रतीत समुत्पाद' कहा जाता है।
- प्रतीत्य समुत्पाद ही बुद्ध के उपदेशों का सार एवं उनकी सम्पूर्ण शिक्षाओं का आधार स्तंभ हैं। प्रतीत्य समुत्पाद कका शाब्दिक अर्थ है - प्रतीत(किसी वस्तु के होने पर) समुत्पाद (किसी अन्य वस्तु को उत्पत्ति) ।
- ।
- बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी हैं वास्तव में बुद्ध ने ईश्वर के स्थान पर मानव प्रतिष्ठा पर बल दिया।
- बौद्ध धर्म अनात्मवादी है इसमें आत्मा की परिकल्पना नहीं की गई है। यह पुनर्जन्म में विश्वास करता है। अनात्मवाद को नैरात्मवाद भी कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था एवं जाति प्रथा का विरोध किया।
- बौद्ध संघ का दरवाजा हर जातियों के लिए खुला था। स्त्रियों को भी संघ में प्रवेश का अधिकार प्राप्त था। इस प्रकार वह स्त्रियों के अधिकारों का हिमायती था ।

- संघ की सभा में प्रस्ताव का पाठ होता था । प्रस्ताव पाठ को अनुसावन कहते थे । सभा की वैध कार्यवाही के लिए न्यूनतम संख्या 20 थी ।
- संघ में प्रविष्ट होने को उपसम्पदा कहा जाता है ।
- बौद्ध संघ का संगठन गणतंत्र प्रणाली पर आधारित था । संघ में चोर, हत्यारों, ऋणी व्यक्तियों, राजा के सेवक, दास तथा रोगी व्यक्तियों का प्रवेश वर्जित था।
- बौद्धों के लिए महीने के 4 दिन अमावस्या, पूर्णिमा और दो चतुर्थी दिवस उपवास के दिन होते थे।
- अमावस्या, पूर्णिमा तथा दो चतुर्थी दिवस को बौद्ध धर्म में 'उपोसथ' श्रीलंका मेंद्ध के नाम से जाना जाता हैं।
- बौद्धों का सबसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण त्यौहार वैशाख पूर्णिमा हैं जिसे 'बुद्ध पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है।
- बौद्ध धर्म में बुद्ध पूर्णिमा के दिन का इस लिए महत्व है क्योंकि इसी दिन बुद्ध का जन्म,ज्ञान का प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।
- महात्मा बुद्ध से जुड़े आठ स्थान लुम्बिनी, गया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकास्य, राजगृह तथा वैशाली को बौद्ध ग्रंथों में 'अष्टमहास्थान' नाम से जाना गया।

बौद्ध संगीतियाँ

1. प्रथम–

स्थान-राजगृह

समय-483ई०पू०

अध्यक्ष-महाक्स्सप

शासनकाल-अजातशत्रु

उद्देश्य-बुद्ध के उपदेशों को दो पिटकों विनय पिटक तथा सुत्त पिटक में संकलित किया गया |

2.द्वितीय–

स्थान–वैशाली

समय -383ई०पू०

अध्यक्ष–सबकमीर

शासनकाल–कालाशोक

उद्देश्य–अनुशासन को लेकर मतभेद के समाधान के लिए बौद्ध धर्म स्थाविर एवं महासंघिक दो भागों में बँट गया |

3.तृतीय–

स्थान-पाटलिपुत्र

समय–251ई०पू०

अध्यक्ष–मोग्गलिपुत्तिस्स

शासनकाल– अशोक

उद्देश्य–संघ भेद के विरुद्ध कठोर नियमों का प्रतिपादन करके बौद्ध धर्म को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयत्न किया गया | धर्म ग्रंथो का अंतिम रूप से सम्पादन किया गया तथा तीसरा पिटक अभिधम्मपिटक जोड़ा गया |

4.चतुर्थ–

स्थान–कश्मीर के कुंडलवन

समय–लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी

अध्यक्ष–वसुमित्र एवं अश्वघोष

शासनकाल–कनिष्क

उद्देश्य–बौद्ध धर्म का दो सम्प्रदायों हीनयान तथा महायान में विभाजन |

- बोरोबुदूर का बौद्ध स्तूप जो विश्व का सबसे बड़ा विशाल तथा अपने प्रकार का एक मात्र स्तूप का निर्माण शैलेंद्र राजाओं ने मध्य जावा इण्डोनेशिया में कराया ।
- बुद्ध के 'पंचशील सिद्धांत' का वर्णन छान्दोग्य उपनिषद में मिलता है ।

बौद्धधर्म का योगदान

- भारतीय दर्शन में तर्कशास्त्र की प्रगति बौद्ध धर्म के प्रभाव से हुई । बौद्ध दर्शन में शून्यवाद तथा विज्ञानवाद की जिन दार्शनिक पद्धतियों का उदय हुआ उसका प्रभाव शंकराचार्य के दर्शन पर पड़ा । यही कारण है कि शंकराचार्य को कभी-कभी प्रच्छन्न बौद्ध भी कहा जाता है
- बौद्ध धर्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन भारतीय कला एवं स्थापत्य के विकास में रही । साँची, भरहुत, अमरावती के स्तूपों तथा अशोक के शिला स्तम्भों, कालें की बौद्ध गुफाएं, अजन्ता, ऐलोरो, बाघ तथा बराबर की गुफाएं, बाघ तथा बराबर की गुफाएं बौद्ध कालीन स्थापत्य कला एवं चित्रकला श्रेष्ठतम आदर्श है।
- बुद्ध के अस्थि अवशेषों पर भट्टि में निर्मित प्राचीनतम स्तूप को महास्तूप की संज्ञा दी गई है।
- गान्धार शैली के अन्तर्गत ही सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण किया गया । सम्भवत: प्रथम बुद्ध मूर्ति मथुराकला के अन्तर्गत बनी ।

जैन धर्म

- जैन परम्परा के अनुसार इस धर्म में 24 तीर्थंकर हुए। इनमें प्रथम ऋषभदेव हैं। किन्तु 23 वें तीर्थंकर पाशर्वनाथ को छोड़कर पूर्ववर्ती तीर्थंकरों की ऐतिहासिक संदिग्ध है।
- पाशर्वनाथ का काल महावीर से 250 ई० पू० माना जाता हैं इनके अनुयायियों को निर्ग्रन्थ कहा जाता था ।
- जैन अनुश्रुतियों के अनुसार पाशर्वनाथ को 100 वर्ष की आयु में 'सम्मेद पर्वत' पर निर्वाण प्राप्त हुआ।
- पाशर्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार महाव्रत इस प्रकार है - सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, तथा अस्तेय ।
- महावीर स्वामी - जैनियों के 24वें तीर्थंकर एवं जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक माने जाते हैं।
- महावीर का जन्म वैशाली कके निकट कुण्डग्राम के ज्ञातृक कुल के प्रधान सिद्धार्थ के यहाँ 540 ई० पू० में हुआ । इनकी

माता का नाम त्रिशला था जो लिच्छवि राजकुमारी थी तथा इनकी पत्नी का नाम यशोदा था।

- यशोदा से जन्म लेने वाली महावीर की पुत्री 'प्रियदर्शना' का विवाह जामालि नामक क्षत्रिय से हुआ, वह महावीर का प्रथम शिष्य था ।
- 30 वर्ष की अवस्था में महावीर ने गृहत्याग किया ।
- 12 वर्ष तक लगातार कठोर तपस्या एवं साधना के बाद 42 वर्ष की अवस्था में महावीर को जिम्भिकग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे एक साल के वृक्ष नीचे कैवल्य(सर्वेच्च ज्ञान) प्राप्त हुआ ।
- कैवल्य प्राप्त हो जाने के बाद स्वामी को केवलिन, जिन, अर्ह एवं निर्ग्रन्थ जैसी उपाधियाँ मिली । उनकी मृत्यु पावा में 72 वर्ष की उम्र में 468ई० पू० में हुई।
- बौद्ध साहित्य में महावीर को निगण्ठ- नाथनपुत्त कहा गया है।
- जैन दर्शन - जैन ग्रन्थ आचारांग सूत्र में महावीर की तपश्चर्या तथा कायाक्लेश का बड़ा ही रोचक वर्णन मिलता है।
- जैन धर्मानुसार यह संसार 6 द्रव्यों - जीव, पुद्गल धर्म, अधर्म, आकाश और काल से निर्मित हैं।
- अपने पूर्वगामी पाश्र्वनाथ,द्वारा प्रतिपदित चार महाव्रतों में महावीर ने पांचवा महाव्रत जोड़ा ।
- जैनधर्म के त्रिरत्न हैं- **(1)**सम्यक् श्रद्धा**(2)**सम्यक् ज्ञान तथा **(3)**सम्यक् आचरण।
- जैन धर्म में निर्वाण जीव का अंतिम लक्ष्य है। कर्म फल का नाश तथा आत्मा से भौतिक तत्व हटाने से निर्वाण सम्भव है।

जैन धर्म से निम्नलिखित है –

आस्त्रव–कर्म का जीवन की ओर प्रवाह आस्रव कहलाता है

संवर–जब कर्म का प्रवाह जीव की ओर रुक जाय |

निर्जरा–अवशिष्ट कर्म का जल जाना या पहले से विद्यमान कर्मो का क्षय हो जाना निर्जरा कहलाता है |

बंधन– कर्म का जीव के साथ संयुक्त हो जाना बंधन कहलाता है |

- भिक्षुओं के लिए पंच महाव्रत तथा गृहस्थों के लिए पंच अणुव्रतों की व्यवस्था है ।
- जैन धर्म में अनेक प्रकार के ज्ञान को परिभाषित किया गया है –

मति–इंद्रिय-जनित ज्ञान

श्रूति–श्रवण ज्ञान

अवधि–दिव्य ज्ञान

मन; पर्याय– एनी व्यक्तियों के मन मस्तिष्क का ज्ञान |

कैवल्य–पूर्ण ज्ञान

जैन धर्म ज्ञान के तीन स्त्रोत है-

- (1) प्रत्यक्ष

- (2) अनुमान तथा
- (3) तीर्थंकरों के वचन ।
- मोक्ष के पश्चात जीवन आवागमन के चक्र से छुटकारा पा जाता है तथा वह अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य तथा अनन्त सुख की प्राप्ति कर लेता है। इन्हें जैन शास्त्रों में अनन्त चतुष्टय की संज्ञा प्रदान की गई है।
- स्यादवाद(अनेकान्तवाद) अथवा सप्तभंगीनय को ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत कहा जाता है।
- महावीर ने अपने जीवन काल में ही एक संघ की स्थापना की जिसमें 11 प्रमुख अनुयायी सम्मिलित थे। ये गणधर कहलाए ।
- महावीर के जीवन काल में ही 10 गणधर की मृत्यु हो गई, महावीर के बाद केवल सुधर्मण जीवित था।

प्रमुख विशेषताएँ

- जैन धर्म में देवाताओं के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है किन्तु उनका स्थान जिन से नीचे रखा गया है।
- जैन धर्म संसार की वास्तविकता को स्वीकार करता है पर सृष्टिकर्ता के रुप में ईश्वर को नहीं स्वीकारता हैं।
- बौद्ध धर्म की तरह जैन धर्म में वर्ण व्यवस्था की निन्दा नहीं की गई है।
- महावीर के अनुसार पूर्व जन्म में अर्जित पुण्य एवं पाप के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च अथवा निम्न कुल में होता है।
- जैन धर्म पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करता है। उनके अनुसार कर्मफल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है।
- जैन धर्म में मुख्यतः सांसारिक बन्धनों से मुक्त प्राप्त करने के उपाय बताए गये है ।
- जैन धर्म में अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है। इसमें कृषि एवं युद्ध में भाग लेने पर प्रतिबंध लगाया जाता हैं।
- जैन धर्म में सल्लेखना से तात्पर्य है 'उपवास द्वारा शरीर का त्याग' ।
- कालांतर में जैन धर्म दो समुदायों में विभाजित हो गया।
  (1) तेरापन्थी
  (2) समैया
- भद्रबाहु एवं उनके अनुयायियों को दिगम्बर कहा गया । ये दक्षिणी जैनी कहे जाते थे ।
- स्थलबाहु एवं उनके अनुयायियों को श्वेताम्बर कहा गया । श्वेताम्बर सम्प्रदाय के लोगों ने ही सर्वप्रथम महावीर एवं अन्य तीर्थंकर की पूजा आरम्भ की। ये सफ़ेद वस्त्र धारण करते थे।

- राष्टकूट राजाओं के शासन काल में दक्षिणी भारत में जैन धर्म का काफी प्रचार हुठ । गुजरात ततथा राजस्थान में जैन धर्म 11वीं तथा12वी शताब्दियों में अधिक लोकप्रिय रहा।
- जैनों के उत्तर भारत में दो प्रमुख केन्द्र उज्जैन एवं मथुरा थे।
- दिलवाड़ा में कई जैन तीर्थंकर जैसे - आदिनाथ, नेमिनाथ आदि के मन्दिर तथा खजुराहों में पाशर्वनाथ आदिनाथ आदि के मन्दिर हैं ।

जैन संगीति(सभा)

- प्रथम सभा- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में लगभग 300 ई०पू० में पाटलिपुत्र में सम्पन्न हुई थी । इसमें जैन धर्म के प्रधान भाग 12 अंगों का सम्पादन हुआ । यह। सभा स्थूलभद्र एवं सम्भूति विजय नामक स्थविरों निरीक्षण में हुई ।
- जैन धर्म दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दो भागों में बँट गया।
- द्वितीय सभा- यह सभा देवर्धि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में गुजरात में वल्लभी नामक स्थान पर लगभग 513 ई० में सम्पन्न हुई। इसमें धर्म ग्रंथों का। अंतिम संकलन कर इन्हें लिपिबद्ध किया गया।

भागवत धर्म

- भागवत धर्म का उद्भव मौर्योत्तर काल में हुआ | एस धर्म के विषय में प्रारभिक जानकारी उपनिषदों में मिलती है |
- इस धर्म के संस्थापक वासुदेव कृष्ण थे जो वृष्णि वंशीय यादव कुल के नेता थे |
- वासुदेव की पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख भक्ति के रूप में पाणिनी के समय ई०पू० पाँचवीं शती में मिलता है |
- छान्दोग्य उपनिषद में श्री कृष्णा का उल्ले सर्वप्रथम मिलता है उसमें कृष्णा को देवकी पुत्र व् ऋषि घोर अंगिरसका शिष्य बताया गया है |
- ब्राहमण धर्म के जटिल कर्मकाण्ड एवं यज्ञीय व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप उदय होने वाला भागवत सम्प्रदाय था |
- वासुदेव कृष्णा के भक्त या उपस्क भागवत कहलाते थे |
- एक मानवीय नायक के रूप में वासुदेव के दैवीकरण का सबसे प्राचीन उल्लेख पाणिनी की अष्टध्यायी से प्राप्त होता है |
- वासुदेव कृष्णा को वैदिक देव कृष्णा का अवतार माना गया | बाद में इनका समीकरण नारायण से किया गया | नारायण के उपासक पांचरात्रिक कहलाए |
- भागवत धर्म सम्भवत : धर्म सूर्य पूजा से सम्बन्धित है |
- भागवत धर्म का सिद्धांत भगवद्गीता में निहित है |
- वासुदेव कृष्णा सम्प्रदाय सांख्य योग से सम्बन्धित था | इसमे वेदांत, सांख्य, और योग के विचारधारों के दार्शनिक तत्वों को मिलाया गया है |
- जैन धर्म ग्रन्थ उत्तराध्ययन सूत्र में वासदेव जिन्हें केशब नाम से भी पुकारा गया है, को 22वें तीर्थकर अरिष्टनेमि का समकालीन बताया गया है |

HARYANA JOB ALERT

- भागवत स्म्द्रय के मुख्य तत्व है भक्ति और अंहिसा है | भगवतगीता में प्रतिपादित 'अवतार सिद्धांत' भागवत धर्म की महत्वपूर्ण विशेषता थी |
- भगवान विष्णु को अपना इष्टदेव मानने वाले भक्त वैष्णव कहलाए तथा तत्सम्बन्धी धर्म वैष्णव कहलाया | भागवत से विष्णु धर्म की स्थापना विकास कर्म की धारा है | वैष्णव धर्म नाम का प्रचलन 5वीं शती ई० के मध्य में हुआ |
- वैसे विष्णु के अधिकतम अवतारों की संख्या 24 है पर मत्स्यपुराण में दस अवतारों का उल्लेख मिलता है | इन अवतारों में कृष्णा का नाम नहीं है क्योकि कृष्णा स्वयं भगवान के साक्षात् स्वरूप है | प्रमुख दस अवतारों निम्न है – मत्स्य, कुर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम,बलराम, बुद्ध और कल्कि |
- विष्णु के अवतारों में 'वराह-अवतार सर्वाधिक लोकप्रिय था' वराह का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में है |
- नारायण, नसिंह एवं वामन देवीय अवतार माने जाते है और शेष सात मानवीय अवतार |
- अवतारवाद का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्ल्सेख भगवद्गीता में मिलता है |
- परम्परानुसार, शूरसेन जनपद के अधंक, वृष्णि संघ में कृष्णा का जन्म हुआ था और वे अधंक, वृष्णि संघ के प्रमुख भी थे | कालान्तर में पाँच वृष्णि, नायकों संकर्षण, वासदेव कृष्णा प्रद्युम्न, साम्ब, अनिरुद्ध की पूजा की जाति थी |
- वासुदेव कृष्णा सहित चार वृष्णि वीरों की पूजा की चतुर्व्यह के रूप में कल्पना की गई है |
- चतुर्व्यह पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख विष्णु संहिता में मिलता है |
- पाञ्चजन्य– यह वैष्णव धर्म का प्रधान मत था | इस मत का विकास लगभग तीसरी शती ई०पू० में हुआ |
- नारद के अनुसर पाञ्चजन्य में परमतत्व, मुक्ति, युक्ति, योग और विषय जैसे पांच पदार्थ है इसलिए यह पाञ्चजन्यकहा गया |
- पाञ्चजन्य के मुख्य उपासक नारायण विष्णु थे |
- दक्षिण भारत में भागवत धर्म के उपासक अलावर कहे जाते थे | अलावर अनुयायियों की विष्णु अथवा नारायण के प्रति अपूर्व निष्ठा और आस्था थी |
- वैष्णव धर्म का गढ़ दक्षिण में तमिल पदेश में था 9वीं और 10वीं शताब्दी का अंतिम चरण आलवारों के धार्मिक पुनरुत्थान का उत्कर्ष काल था | इन भक्ति आंदोलन में तिरुमंगाई, पेरिय अलवार, स्त्री संत अंडाल तथा नाम्माल्वार के नाम विशेष उल्लेखनीय है |
- 'नारायण' का प्रथम उल्लेख 'शतपथ ब्राहमण' में मिलता है |
- मेगस्थनीज ने कृष्णा को 'हेराक्लिज' ने कहा |

HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!

- प्रतिहार के शासक मिहिर भोज ने विष्णु को निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में स्वीकार करते हुए 'हेषीकेश' कहा |
- केरल का संत राजा कुलशेखर विष्णु का भक्त था |

शैव धर्म

- शिव भक्ति के विषय में प्रारम्भिक जानकारी सिन्धु घाटी से प्राप्त होती है | ऋग्वेद में शिव से साम्य रखने वाले देवता रूद्र है |
- महाभारत में शिव का उल्लेख एक श्रेष्ठ देवता के रूप में हुआ | मेगस्थनीज ने ई०पू० चौथी शताब्दी में शैवमत का उल्लेख किया है |
- वस्तुतः शैव धर्म का प्रारम्भ शंगु-सातवाहन काल से हुआ | जो गुप्त काल में चरम परिणति पर पहुँचा |
- अर्द्धनारीश्वर तथा त्रिमूर्ति की पूजा गुप्तकाल में आरम्भ हुई | समन्वय की यह उदार भावना गुप्त काल की विशेषता है |
- अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति शिव एवं पार्वती के परस्पर तादात्म्य पर आधारित थी | ऐसी पहली मूर्ति का निर्माण गुप्तकाल में हुआ |
- लिंग पूजा का प्रथम स्पष्ट उल्लेख मत्स्य पुराण में मिलता है | महाभारत के अनुशासन पर्व में भी लिंगोपासना का उल्लेख है |
- हरिहर के रूप में शिव की विष्णु के सर्वप्रथम मूर्तियों गुप्तकाल में बनायी गई |
- शिव की प्राचीनतम मूर्ति 'गुडीमल्लम लिंग रेनगुंटा' से मिली है |
- कौषितिकी एवं शतपथ ब्राह्मण में शिव के आठ रूपों का उल्लेख है – चार संहारक के रूप में तथा चार सौम्य रूप में |
- शैव सम्प्रदायों का प्रथम उल्लेख पंतजलि के 'महाभाष्य' में शिव भागवत नाम से हुआ |
- वामन पुराण में शैव सम्प्रदाय की संख्या चार बताई गई है ये है –

1. शैव
2. पाशुपत
3. कापालिक और
4. कालमुख |

1.शैव– एस सम्प्रदाय के अनुसार कर्ता शिव है, कारण शक्ति और उपादान बिंदु है |

इस मत के चार पाद या पाश है – विद्या, क्रिया, योग, चर्या |

2.पाशुपत–यह शैव मत का सबसे पुराना सम्प्रदाय के संस्थापक लकुलीश या नकुलीश थे | जिन्हें भगवान शिव के 18 अवतारों में से एक माना जाता है |

- इस सम्प्रदाय के अनुयायियों को पन्चार्थिककहा गया है } इस मत के प्रमुख सैद्धांतिक ग्रन्थ पाशुपत है |

❋ पाशुपत सम्प्रदाय का गुप्तकाल में अत्यधिक विकास हुआ | इसके सिद्धांत के तीन अंग है – 'पति', 'पशु', 'पाश', पशुपति के रूप में शिव की उपासना की जाती थी |

3.कापालिक– कापालिकों के इष्टदेव भैरव थे | जो शंकर का अवतार माने जाते थे |

❋ यह सम्प्रदाय अत्यंत भयंकर और आसुर प्रावृति का था | इसमें भैरव को सूरा और नरबली का नैवेद्य चढ़ाया जाता था |

❋ इस सम्प्रदाय का मुख्य केंद्र 'श्री शैल' नामक स्थान था जिसका प्रमाण भवभूति के मालतीमाधव में मिलता है |

4.**कालामुख**– एस सम्प्रदाय के अनुयायी कापालिक वर्ग के ही थे, किन्तु वे उनसे भी अतिवादी और प्रकृति के थे |

❋ शिव पुराण में उन्हें महाब्रतधर कहा गया है | एस सम्प्रदाय के अनुयायी नर-कपाल में भोजन, जल तथा सुरापान करते थे तथा शरीर में भ्रम लगाते थे |

❋ लिंगानुपात सम्प्रदाय – दक्षिण भारत में भी शैव धर्म का विस्तार हुआ | इस धर्म के उपासक दक्षिण में लिंगानुपात या जंगम कहे जाते थे |

❋ दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रचार नयनार या आडियार संतों द्वारा किया गया, ये संस्था में 63 थे | इनके श्लोकों के सग्रह को 'तिरुमुडै' कहा जाता है जिसका संकलन 'नीम्ब-अण्डला-नम्बि' ने किया |

शक्त धर्म

❋ वैसे मातृदेवी की उपासना का सूत्र पूर्व वैदिक काल में भी खोजा जा सकता है परन्तु देवी या शक्त की उपासना का सम्प्रदाय वैदिक काल जितना ही प्राचीन है |

❋ शक्ति सम्प्रदाय का शैव मत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है |

❋ इस आदि शक्ति या देवी की पूजा का स्पष्ट उल्लेख महाभारत में प्राप्त होता है |

❋ पुराणों के अनुसार शक्ति की उपासना मुख्यता कलि और दुर्गा की उपासना तक ही समिति है |

❋ वैदिक साहित्य में उमा, पार्वती, अम्बिका, हेमवती, रुद्राणी और भवानी जैसे नाम मिलते है |

❋ ऋग्वेद के 'दशम मंडल' में एक पूरा सूक्त ही शक्ति की उपासना में विवृत है जिसे 'तांत्रिक देवी सूक्त' कहते है |

❋ चौसठ योगिनी का मन्दिर शक्त धर्म के विकास और प्रगति को प्रमाणित करने का साक्ष्य उपलब्ध है |

❋ उपासना पद्धति – शक्तों के दो वर्ग है - कौलमार्गी और समयाचारी |

❋ पूर्ण रूप से अद्वैतवादी साधक कौल कहे जाते है, जो कर्दम और चन्दन में, शुत्र और पुत्र में श्मशान और भवन में तथा कांचन और तृण में कोई भेद नहीं समझते |

❋ आजीवक या नियतिवादी सम्प्रदाय - संसार में सब बातें पहले से ही नियत है "जो नही होना है वः नहीं होगा जो होना है वः

कोशिश के बिना हो जायेगा | अगर भाग्य न हो तो आई हुई चीज थी नष्ट हो जाती है |"

आजीवक लोग पौरुष कर्म और उत्थान की अपेक्षा भाग्य या नियति को अधिक बलवान मानते थे |

छठी शताब्दी ई. पू. में महाजनपद

- उत्तर वैदिक काल में जनपद का उदय हो चूका था 600 BC में इनका और अधिक विकास हुआ और ये महाजनपद में बदल गये | अगुतर निकाय नामक बौद्ध ग्रन्थ में 16 महाजनपद क वर्णन है |

कम्बोज

- प्राचीन भारत के पश्चिम सीमा पर उतरापंथ पर स्थित था | यह क्षेत्र घोड़े के लिए विख्यात था | इसकी राजधानी हाटन राजपुर थी | चन्द्वर्धन यहाँ का रजा था |

गंधार

- यह आधुनिक पेशावर एवं रावलपिंडी जिले में स्थित था | इसकी राजधानी तक्षशिला थी | यहाँ पुष्कर सिरिन नामक शासक था |

मतस्य

- आधुनिक जयपुर के आसपास के क्षेत्र में यह महाजनपद स्थित था | इसकी राजधानी विराटनगर थी |

पंचाल

- आधुनिक युग में रूहेलखण्ड ,फरूर्खाबाद , बरेली, बदायूं, का जिला शामिल था | इसके दो भाग थे | उतरी पंचाल की राजधानी अहिक्षत्र एवं दक्षिण पंचाल की राजधानी काम्पिल्य थी | पांड्वों की पत्नी द्रोपदी यहा की राजकुमारी थी |

कुरू

- आधुनिक मेंरठ जिला एवं दक्षिणी पूर्व हरियाणा में स्थित था | इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी|

शूरसेन

- इसकी राजधानी मथुरा थी | बुद्ध के समय यहाँ क शासक अवन्तिपुत्र था जो बुद्ध का अनुयायी था |

चेदि

- यमुना नदी के किनारे आधुनिक बुंदेलखंड के क्षेत्र में स्थित था | इसकी राजधानी सोथीवती थी | महाभारत काल में शिशुपाल यहाँ का राजा था **अवन्ती**
- आधुनिक मध्य प्रदेश के मालवां क्षेत्र में स्थित था | इसके दो भाग थे उतरी अवन्ती की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिणी अवन्ती की राजधानी महिष्मती थी | बुद्ध के समय चन्दप्रघोत यहाँ का शासक था |

अस्मक

- सभी महाजनपद में सिर्फ अस्मक ही दक्षिण भारत में स्थित था यह गोदावरी नदी के किनारे वसा था | इसकी राजधानी पोतन थी | बाद में इसे अवन्ति ने अपने साम्राज्य में मिला लिया |

कोसल

- पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित इस महाजनपद को सरयु नदी दो भागोंमें बांटती थी उत्तरी भाग की राजधानी श्रावस्ती एवं दक्षिणी भाग की राजधानी अयोध्या थी बुद्ध के समय

प्रसेनजित यहां का शासक था कोसल ने बाद में कपिलवस्तु के शाक्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया

वत्स

- आधुनिक इलाहाबाद के क्षेत्रमें स्थित था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी बुद्ध के समकालिन यहा का शासक उदयन था यह यमुना नदी के किनारे बसा था

काशी

- काशी नगरी को शिव की नगरी के नाम से जाना जाता है इसकी राजधानी वांराणसी थी इसे कोसल ने अपने राज्य में मिला लिया था

मल्ल

- आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार के कुछ हिससे में स्थित था इसकी राजधानी कुशीनारा थी यहा पर गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था प्रचलित थी

वृज्जि

- आधुनिक बिहार राज्य के गंगाके उत्तर तिरहुत प्रमण्डल में स्थित था | यह गंगाराज्यो का सघ था जिसमें कुल 8 राज्य शामिल थे यथा विदेह ,वृज्जि, लिच्छवीं इत्यादि

अंग

- यह क्षेत्र आधुनिक बिहार राज्य के भागलपुर एवं मुगेर जिले में स्थित था इसकी राजधानी चम्पा थी बुद्ध के समययहा काशासक ब्रहादत था जिसे बिम्बिसार ने पराजित कर अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया था|

मगध

- वर्तमान में बिहार राज्य के आधुनिक पटना एवं गया जिले में स्थित था | इसकी राजधानी राजगृह या गिरिव्रज थी | महावंश के अनुसार 15 वर्ष की आयु में बिम्बिसार मगध का राजा बना और हर्यकवंश की स्थापना की | बिम्बिसार का शासनकाल 544 BC से 492 BC तक रहा इसमें उसने प्रसेनजित की बहन कोसलदेवीं, लिच्छवीं राजकुमारी चेल्हना एवं पंजाब के भद्र कुल के प्रधान की पुत्री क्षेमा से विवांह कर राज्य को सुदृढ बनाया और अग विजय दवांरा साम्राज्य विस्तार भी किया |
- बिम्बिसार के बाद उसका अजात शुत्र मगध का राजा बना | इसका शासनकाल 492 BC से 460 BC रहा इसने अपने मामा प्रसेनजित से काशी प्राप्त किया तो लिच्छवीं पर विजयी अभियान भी किया |
- अजातशुत्र के बाद उदयन शासक बना जिसका शासनकाल 460 BC से 444 BC रहा इसने पाटलिपुत्र को नई राजधानी बनाया |
- हर्यक वंश का अंतिमशासक नागदसक एक अयोग्य शासक था | इसे जनता ने पदच्युत कर शिशुनाग को मगध का सम्राट बनाया | इसने शिशुनाग वंश की स्थापना की यह पहला निर्वाचित शासक माना जाता है | इसने अवन्ति को मगध साम्राज्य में मिला लिया
- शिशुनाग का उतराधिकारी कालाशोक हुआ जो कुछ समय के पाटलिपुत्रराजधानी से वैशाली ले गया इसी के शासनकाल मेंद्वितीय बौधद समिति का आयोजन किया गया |

- शिशुनाग वंश के बाद मगध पर नंद वंश का शासन स्थापित हुआ जिसका संस्थापक महानदिन था महानंदिन के पुत्रमहापदमनद को शुद्र पुत्र माना जाता है जो महानंदिन की हत्या कर स्वयं शासक बन बैठा|
- नद वंश का अंतिमशासक धनायद था जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य ने पराजित कर मगध साम्राज्य पर मौर्य पर वंश की स्थापना की |
- इसके अलावां छठी शताब्दी ई. पू. में कपिल वस्तु के शाक्य नामक प्रमुख गणराज्य थे

विदेशी आक्रमण

- पश्चिमोतर भारत में गंधार, कंबोज एवं मद्र जनपद आपस में लडते रहते थे | इसका लाभ ईरान के अखमनी शासको ने उठाया इस वंश के दारा प्रथम में सिंध क्षेत्र पर आक्रमण कर इसे अपने साम्राज्य का 20 वां क्षेत्रपी घोषित किया यह आक्रमण 500 BC के आस पास हुआ था |
- यूनान के फिलिप के पुत्र सिकन्दर महान ने 326 BC में भारत अभियान किया इसमेंतक्षशिक्षा के शासक आम्भी ने सिकन्दर की सहायता की | इस लिए आम्भी प्रथम गद्दार बना | जिसने भारत भूमि पर विदेशियो को सहायता पहुंचाने का कार्य किया |
- भारत अभियान के तहत सिकन्दर का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध झेलम या वितस्ता का युद्ध था जो पोरस के साथ हुआ इसमें पोरस पराजित हुआ परन्तु उसकी वींरता से प्रभावित होकरसिकन्दर ने उसका राज्य लौटा दिया |
- सिकन्दर व्यास नदी से वांपस लौट गया क्योकि उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया | व्यास नदी के तट पर 12 वेदिकाएं बनाई |
- सिकन्दर ने दो नगर निकैया एवं वुकफेला बसाया। सिकन्दर 19 महीने भारत रहा । लौटने के दौरान मलेरिया रोग के कारण उसकी मृत्यु हो गई ।

मौर्य साम्राज्य

- तक्षशिलाके निवांसी ब्रहामण विष्णुगुप्त जिसे इतिहास में चाणक्य एवं कौटिल्य के नाम से जाना जाता है ,नंद वंश के अंतिमशासक धनानंद को मगध के सिंहासन से पदच्युत कर चन्द्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर सिंहासनसीन करने में सहायता की चाणक्य की नंदो से घृणा के कारण नदो से इस अपमानित किया था
- चन्द्रगुप्त मौर्य 332 BC में मगध की गद्धी पर बैठा और 298 BC तक शासन किया | युनानी लेखकों ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सैडोकोटस, एडोकोट्सके नाम से पुकारा है चन्द्रगुप्त के समय के प्रमुख घटनाओ में बैक्टिया के शासक सेल्युकस के साथ 305 B.C मेंयुद्ध है जिसमें बाद मेंसंधि हो गयी थी और सेल्युकस ने अपनी का पुत्री का विवांह चन्द्रगुप्त मौर्य से कर दिया और अपने प्रांतो का कुछ भाग दहेज के रूप में दिया और मैंगास्थनीज नामक दूत को भारत भेजा । चन्द्रगुप्त ने 500 हाथी का उपहार सेल्युकस को दिया|
- सेल्युकस-सिकन्दर का सेनापति था जिसेपश्चिमोतर भारत का अधिपति बनाया गया था

- रुद्रदामन के जूनागढ अभिलेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने गिरनार में सुदर्शन झील का निर्माण करवांया और उस प्रदेश में अपना एक गवर्नर पुष्पगुप्त को नियुकत करवांया |
- मगध में12 वर्ष के अकाल पड़ने पर चन्द्रगुप्त अपने साम्राज्य का भार अपने पुत्र बिदुंसार को सौंपकर जैन साधु भद्रबाहु के साथ कर्नाटक राज्य के मैसूर श्रवणबेलगोला चला गया जहां कायाक्लेश दवांरा 298 BC में शरीर त्याग दिया |

बिदुंसार

- बिदुंसार का शासन काल 298 BC से 273 BC तक रहा है बिदुंसार को राजकाज में सहायता देने के लिए दरबार में 500 सदस्यो की परिषद थी और इसका पहला प्रधान चाणक्य था इसके बाद सुबन्धु , खल्लाटक ,राधागुप्त,मत्रीपरिषद के प्रधान बने ।
- बिदुंसार के शासन काल में अशोक अवन्ति का गवर्नर था ।
- बिदुंसार के दरबार में यूनान के डायमेंकस और मिश्र के डायोनिसियस दूत आए थे बिदुंसार ने सीरियाई नरेश से मीठा शराब ,सूखा अजीर एवं दाशर्निक खरीद कर भेजने काआग्रहकिया | सीरियाई नरेश ने दो चीजों को भेज दिया और दार्शनिक के लिए मना कर दिया |

अशोक

- 273 BC में बिंदुसार के मृत्यु के बाद एवं 269 BC में अशोक के सिहासनासीन के बीच 4 वर्षो सत्ता संघर्ष के रहे कुछ साहित्य से पता चलता है| कि अशोक अपने 99 भाइयो की हत्या कर गद्दी पर बैठा । सामान्य विचाराधारा यह है कि अशोक अपने बडे भाई सुशीम की हत्या कर गद्दी पर बैठा । अशोक का शासन काल 269 BC से 232BCरहा । अशोक के प्रमुख विजयो में कलिग विजय महत्वपूर्ण है जो अपने राज्यभिषेक के 9 वे वर्ष में की 260 BC में कलिग विजय के बाद साम्राज्यवांदी नीति का परित्याग कर दिया और धम्म यात्रा के क्रम में सबसे पहले बोधगया गया
- अशोक ने नेपाल में पाटनं,देवपाटन एवं ललितपाटन नामक नगर बसाये तो काश्मीर में श्रीनगर नामक नगर बसाया |
- अशोक ने आजीविको के वर्षकालीन आवांस के लिए बराबर की पहाडियों में गुफाओं का निर्माण करवांया |
- मौर्य वंश काअंतिमअयोग्य शासक था वृहद्रथ की इसके एक ब्रहामण सेनापति पुष्यमित्र शुग ने 185 BC में हत्या कर दी | इससे मौर्य वंश का अंत हो गया और मगघ पर शुग वंश की स्थापना की |

मौर्य प्रशासन

- मौर्य काल मेंराजा सर्वोपरि होता था | सारी शक्तिया,इसमेंनिहित होता है राजा की सहायता के लिए मत्रिपरिषद नामक सस्था थी जिस 3-4 सदस्य होते थे | इसका चयन आमत्य वर्ग में से किया जाता था |
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजकाल चलाने के लिए अधिकारियों का वर्णन है जिसे तीर्थ कहा जाता था इनकी संख्या 18 है तीर्थ में युवराज भी होते थे | अधिकारियों को 60पण से 48000 पण तक वेतन दिया जाता था |
- तीर्थ के अधीन कार्य करने को अध्यक्ष कहा जाता था अर्थशास्त्र में अध्यक्षोंकी संख्या 27 मिलती है |

- मौर्य काल में शासन व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसे प्रांतोंमें बांटा गया था | मौर्य साम्राज्य को 5 भागों में विभाजित किया जाता था |
  1.उतरापथ जिसकी राजधानी तक्षशिला थी
  2.दक्षिणापथ जिसकी राजधानी सुवर्णगिरी थी
  3.कलिंग जिसकी राजधानी तोसाली थी
  4.अवन्ती जिसकी राजधानी उज्जैन थी
  5.प्राची या मध्यप्रदेश जिसकी राजधानी पाटिलपुत्र थी |
- प्रांतो के शासन चलाने के लिए प्रातपति की नियुक्त केन्द्र द्वारा की जाती थी | कभी-कभी प्रातो के लोगों को भी इस पद पर नियुक्ति कर दिया जाता था |
- प्रांतो का विभाजन जिला में होता था |जिसे अहार या विषय कहा जाता था | इस प्रधान विषयपति होता था शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी |
- शाति व्यवस्था बनाएं रखने के लिए अर्थशास्त्र में रक्षिन और पुलिस की चर्चा है गुप्तचर भी होते थे | ये दो प्रकार के थे -
  1.संस्था:-ये स्थायी जासूस होते थे |
  2.संचरा:-एक जगह से दूसरे जगह घुमने वांले गुप्तचर थे |
- नगर प्रशासन की देखरेख के लिए नागरक नामक अधिकारी होते थे |मेंगास्थनीज ने इन अधिकारियों को एगोनोमोई,एरिस्टोमाई कहा है नगर प्रबंधन के लिए 6 समितिया थी जिसमें 5-5 सदस्य होते थे |
- न्याय व्यवस्था के लिए दो तरह की अदालते होती थी -
  1.धर्मस्थीय :- यह दीवांनी अदालते होते थी |
  2.कंटक शोधन :-यह फौजदारी अदालत थी |
- मौर्यो के पास मेंविशाल सेना थी इनकी संख्या 6 लाख थी
- मौर्य काल में कर के रूप में 1/6 भाग लिया जाता है

मौर्यतर काल

- इस काल में दो तरह के राजवंशों को उदभव होता है
- देशी
- इसमें शुंग वंश ,कण्व वंश ,वांकाटक वंश ,सात -वांहन प्रमुख है |

विदेशी

- इसमें इडोग्रीक,पार्थियाई,शक,कुषाण प्रमुख हैं |

शुंग वंश

- मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या उसके ही ब्राहमण सेनापति पुष्पमित्र शुंग ने कर दी और शुंग वंश की स्थापना की | इस वंश का कार्यकाल 185 BC से 73 BC रहा |
- शुंग शासको ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से विदिशा (बेसनगर) स्थानांतरित कर ली | अन्य प्रमुख नगर में अयोध्या तथा जालंधर प्रमुख थे |
- पुष्प मित्र के समय सबसे महत्व पूर्ण घटना भारत पर यवनों का आक्रमण था | इस आक्रमण का नेता डेमें ट्रिय स था | इस आक्रमण को पुष्प मित्र का पोत्र वसुमित्र ने विफल कर दिया | दूसरा यवन आक्रमण मिनांदर के नेतृत्व में हुआ जिसे शुंग शासको ने विफल कर दिया |
- पतंजलि पुष्प मित्र के पुरोहित थे जिसने महा भाष्य की रचना की |

- पुष्यमित्र शुंग का नवां शासक भगवत अथवां भागभद्र था जिसके काल के 14वे वर्ष में यवन नरेश एंटी याल कड़ीसका दूत हेलियोड़ोरस भारत सुंग शासक के विदिशा स्थित दरबार में आया और भागवत धर्म ग्रहण कर लिया |विदिशा या वेसनगर मेंगरुड स्तम्भ की स्थापना कर भगवांन विष्णु की पूजा अर्चना की |
- इस वंश का दसवां या अंतिम शासक देवभूति था | वांसुदेव ने इसकी हत्या कर कण्व वंश की स्थापना की |
- शुंग शासक भागवत धर्म को मानते थे लेकिन बौद्ध धर्म के प्रति आदर करते थे | भोपाल के पास साँची में तीन स्तूप का निर्माण करवांया |

कण्व वंश

- इसकी स्थापना वसुमित्र के द्वाराकिया गया | इस वंश का शासन काल 73-28 BC रहा | इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था | इस वंश के समय मगध साम्राज्य बिहार एवं पूर्वी उतरी प्रदेश के कुछ छोटे भागोंमें सिमट गया |

सातवांहन राजवंश

- विन्ध्य पर्वत के दक्षिणी उतरी दक्कन के सात वांहन प्रमुख थे |यह किसी न किसी रूप में चार सौ वर्षो तक राज्य किया |
- नानाघट अभिलेख के अनुसार इस वंश का संस्थापक सिमुक था | सातवांहनो ने अपना केन्द्र दक्कन में प्रतिष्ठान या पठन को बनाया |
- इस वंश का इतिहास जानने के लिए महाराष्ट्र के पुना जिला में स्थित नागनिका के नानाघाट अभिलेख वांशिष्ठी पुत्र पुलुमावीं के नासिक एवं काले गुहालेख प्रमुख हैं |
- इस वंश का सबसे पहला महत्वपूर्ण शासक श्री शातकर्णि था | यह शातकर्णि प्रथम के नाम से जाना जाता हैं | इस वंश क शातकर्णी की उपाधि धारण करने वांला प्रथम रजा था |
- शातकर्णि प्रथम ने दो असवमेंघ यज्ञ किये | राजसूय यज्ञ कर उसने राजा कि उपाधि धारण की |
- शातकर्णि प्रथम शासक था जिसने सातवांहन राजवंश को सार्वभौम स्थिति में ला दिया |
- सातवांहन वंश के एक शासक हाल ने गाथा सप्तशती नामक ग्रन्थ की रचना की जो प्राकृत भाषा में थी |
- इस वंश का 23 वां शासक गौतमीपुत्र शातकर्णि था जिसने सातवांहन वंश कि खोयी हुई प्रतिष्ठा को फिर से हासिल किया | इसने वेण कटक नामक नगर बसाया |
- वांशिष्ठी पुत्र पुलुमावीं के शासन काल में सातवांहन साम्राज्य अमरावती तक फ़ैल गया | यह अकेला राजा था | जिसका लेख अमरावती से मिलाता है | इसने अवनगर नामक नगर की स्थापना की |
- इस काल के कला स्थापत्य में अमरावती के उत्तरमें स्थित नागार्जुन पहाड़ी से तीसरी सदी में स्तूप निर्माण हुआ जिसे नागार्जुन कोंड़ स्तूप कहा जाता है | पर्वतों को काटकर चैत्य एवं बिहारो क निर्माण हुआ | अजंता का चैत्य कृष्ण के समय बना था |

कलिंग का चेदि राजवंश

- कलिंग के चेदि राजवंश का संस्थापक महामेंघ वांहन था |
- इस वंश का इतिहास उदयगिरि पर्वत पर स्थित हाथीगुम्फा अभिलेख से पता चलता है जो भुवनेश्वर से 5 मील दूर स्थित है |
- इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक खारबेल था | खारबेल ने अपने शासन के 5वे वर्ष राजधानी में नहर का निर्माण करवांया खारबेल ने पुष्यमित्र को पराजित कर वहा से जिन की मूर्ति को उठा लिया जिसे नन्द शासक उठा ले गये थे | खारबेल द्वारा निर्मित हाथी गुम्फा अभिलेख प्रसिद्ध है |

वांकाटक राजवंश

- सातवांहनों के बाद वकाटको का आगमन हुआ | इसका काल तीसरी शताब्दी के अंत से छठी शताब्दी के मध्य तक माना जाता है | वांकातक विष्णु वृद्धि गोत्र के ब्राहमण थे |
- वांकाटक राज्य का संस्थापक विन्ध्य शक्ति को माना जाता है | इसने इस वंश की स्थापना 255 ई. में की | यह सातवांहनो के सामंत थे | इसे वंश केतु कहा जाता है |
- प्रवेर सेन प्रथम इस वंश का पहला राजा था | जिसने सम्राट की उपाधि धारण की | अपने सैनिक सफलता से प्रभावित होकर इसने चार अश्व मेंघ यज्ञ किये |
- इसके बाद वका टक दो शाखाओ में विभक्त हो गया | नागपुर शाखा तथा बरार शाखा | नागपुर शाखा गौतमीपुत्र के नेतृत्वमें और बरार शाखा सर्वसेन में नेतृत्व आगे बढ़ा | नागपुर शाखा को ही प्रधान शाखा के रूप में जाना जाता है |
- नागपुर शाखा के रुद्रसेन द्वितीय के साथ गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीयने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता क विवांह किया था | इससे रुद्रसेन द्वितीय शैव से वैष्णव हो गया | रुद्रसेन द्वितीय कि मृत्यु के बाद प्रभावती गुप्ता अपने अवयस्क पुत्र की संरक्षिका बनी और वांकाटक साम्राज्य अप्रत्यक्ष रूप से गुप्त शासक के अधीन आ गया |
- वांकाटक शासक रुद्रसेन II ने सेतुबंध नामक काव्य की रचना संस्कृत में की |
- वांकाटकों के शासन काल में अजन्ता के गुफा न. 9,10 में भिती चित्रों का निर्माण किया गया |

हिन्द यवन या इंडो ग्रीक

- इसका केन्द्र बैक्टिया था जिसकी स्थापना सिकंदर ने की थी |
- बैक्टियामें स्वतंत्र यूनानी साम्राज्य की स्थापना डोयोडोट्स ने कि | इसी वंश के डेमेंट्रियस ने भारत विजय किया |
- भारत में एक ही समय दो यूनानी वंश शासन कर रहे थे |
- पहले डेमेटियस का वंश पूर्वी पंजाब और सिंघ के क्षेत्र पर राज्य किया जिसकी राजधानी तक्षशिला थी |
- दूसरी यूक्रेटाइट्सका वंश जो बैक्टिया से काबुल घाटी तक था |इसकी राजधानी तक्षशिला थी |
- पहले वंश डेमेटियसका सबसे महत्वपूर्ण शासक मीनान्डर था इसे नागसेन नामक बौद्ध भिक्षु ने बौद्ध धर्म कि दीक्षा दी |
- हिन्दू यूनानी शासको ने सबसे पहले स्वर्ण के सिक्के जारी किये |
- हिन्दू यूनानी शासको ने सबसे पहले लेख्युक्त सिक्के जारी किये |
- हिन्द पार्थियाई या पहलव

- पहलव वंश पार्सिया के निवांसी थे | इस वंश कावांस्तविक संस्थापक मिथ्रे डेटस था |
- भारत पर आक्रमण करने वांले पहला पार्थियाई शासक माउस था जिसने 90 से 70 BC तक शासन किया |
- पहलव नरेशो में सर्वाधिक शक्तिशाली गोन्डो फर्नीज था जिसका शासन काल 20 से 41 ई. था | इसी के शासन काल में पहला ईसाई पादरी भारत आया था |
- इसकी राजधानी तक्षशिला थी | इस राज्य क अपहरण कुषाण द्वारा किया गया |

शक शासक

- यूनानियों के बाद शकोंका आगमन हुआ था | पतंजलि , मनु इत्यादि ने भी शकों क उल्लेख किया है | शंक शासक स्वंतत्र को क्षत्रपो कहते थे |
  (i)अफगानिस्तान
  (ii)पंजाब (तक्षशिला)
  (iii) मथुरा
  (iv) कश्मीर
  (V) उतरी दक्कन
- शक मुख्यतः सीरदरया के उत्तरमें निवांस करने वांले बर्बर जाति के थे |
- तक्षशिला के सर्वप्रथम शक शासको में मथुरा के शक शासक राजुल का नाम मिलता है |
- उतरी दक्कन के इतिहास में शक सबसे महत्वपूर्ण थे | नासिक के क्षत्रप क्षहरात कहलाते थे | उज्जैन के क्षत्रप का द्रमक कहलाते थे | नासिक के क्षहरात वंश का पहला शासक भुमक था | काद्रम्क शासको में चाष्टन प्रमुख था |
- कादूर्मक शासकोंमें सबसे महत्वपूर्ण शासक रुद्रदामन था | इसका शासन काल 130 से 150 ई. था | इसने 150 ई. में जूनागढ़ अभिलेख लिखवांया जो संस्कृत भाषा में लिका हुआ पहला अभिलेख माना जाता है |
- रुद्रदामन ने अपनी निजी आय से सुदर्शन झील कि मरम्मत करवांई |

कुषाण राजवंश

- कुषाणोंका मूल निवांस स्थान चीन का सीमावर्ती प्रदेश निगसिया था | हूणों से पराजित होकर सर डॉया आये फिर बेक्टीरिया पर अधिकार कर लिया |
- कुषाणोंका आगमन शकों के बाद हुआ | कुषाण युची कबीले से सम्बंधित थे |
- भारत में कुषाण वंश क संस्थापक कुजुल कडफ़िसेस था | इसने भारत के पश्चिमोत्तर भाग पर अधिकार कर लिया | इसने कोई राजकीय उपाधि धारण नही की |
- कुजुल के बाव विम कडाफिसेस शासक बना |
- 78 ई. में कुषाण वंश का महानतम शासक कनिष्ठ गद्दी पर बैठा | इसके सिहासनारोहण के वर्ष 78 ई. को शक सवत के नाम से जानते है |
- इसकी महत्वपूर्ण विजयो में पाटलिपुत्र सबसे महत्वपूर्ण था राजा को परास्त कर हर्जाने के रूप में बडी रकम मागी बदले मेंअश्वघोष लेखक ,बुध्द के भिक्षापात्र और एक अद्भत मुर्गी पायी ।

- कनिष्क की राजधानी पुरूषुर थी । इसी के शासन काल में चौथी बौध्द सगिति का आयोजन कश्मीर में वुसमित्र की अध्यक्षतामें हुई। इसके उपाध्यक्ष थे |
- काश्मीर में कनिष्क ने एक नगर कनिष्कपुर बसाया था
- कनिष्क में शाक्य मुनि के धर्म के महायान शाखा को प्रक्षय दिया ।
- कनिष्क के दरबार अश्वघोष, वसुमित्र , नागार्जुन , चरक , पाशर्व आदि विदवांन रहते थे अश्वघोष ने बुध्दचरितम् और सौन्दरानंद नामक महाकाव्य की रचना की |
- कनिष्क ने अपनी राजधानी में 400 फीट उँचा एवं 13 मंजिल का एक टावर बनवांया ।

गुप्त काल

- कुषाण साम्राज्य के खण्डहर पर गुप्त साम्राज्य का उदभव हुआ यह मौर्य साम्राज्य के बराबर तो नही फिर उसने भारत में 319 ई. से 555 ई.तक राजनीतिक एकता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की । इस वंश का संस्थापक एवं पहला शासक गुप्त था । और दूसरा शासक श्री घटोत्कच था । इन्होने सिर्फ महाराज की उपाधि धारण की ।

चन्द्रगुप्त

- गुप्त वंशा का यह पहला राजा है जिसने महाराजधिराज का उपाधि धारण की । इसे गुप्त वंश का वांस्तविक संस्थापक भी माना जाताहै इसका शासन काल 319 ई. से 334 ई.रहा । 319 ई. को गुप्त संवत के नाम से जाना जाता है इसने लिच्छवीं राजकुमारी कुमारदेवीं से विवांह किया |

समुद्रगुप्त

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद सम्मुद शासक बना । इसका शासन काल335- 380 ई. तक रहा । इसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है समुदगुप्त के मत्री हरिषेण ने प्रयाग के अशोक अभिलेख पर ही सगुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति की रचना की है ।
- समद्रगुप्त की विजयो का उल्लेख प्रयाग प्रशास्ति में है इसे 5 भागो में बाटा जाता है प्रथम चरण में गंगा यमुना के दोआब क्षेत्र,दूसरे चरण मेंपूर्वी हिमालय और उसके सीमावर्ती,तृतीय चरण में आटविक राज्यो को चतुर्थ चरण में दक्षिण भारत के 12 शासको को पराजित किया 5वे चरण गे कुछ विदेश राज्यो शक एवं कुषाणो को पराजित किया।
- समद्रगुप्त की मृत्यु के बाद रामगुप्त नामक एक अयोग्य उतराधि कारी गद्दी पर बैठा यवनो के आक्रमण से भयभीत होकर रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रवदेवीं को यवनो को सौपने कोतैयार हो गया लेकिन इसका छोटा भाई समद्रगुप्त द्वितीय ने यवनो से साम्राज्य कीरक्षा ही नही की बल्कि यवन नरेश का वध कर दिया ।

चन्द्रगुप्तदवितीय

- अपने भाई रामगुप्त की हत्या कर गद्दी पर बैठा । इसका शासन काल380 से 412 ई. रहा | इसने ध्रवदेवीं से शादी कर ली । इसकी दूसरी शादी नागवंशी कन्या कुबेरनाग से हुई थी | जिससे प्रभावती गुप्त का जन्म हुआ । प्रभावती की शादी वांकाटक नरेश रुद्रसेन दवितीयसे हुई ।
- चन्द्रगुप्त दवितीयकी प्रमुख विजय शकों के विरूध्द थी । गुजरात के शक विजय के बाद इसने चाँदी का सिक्का जारी

किया और उज्जैन को दूसरी राजधानी बनाया । इसने विक्रमादित्य की उपाधि भी धारण की ।

- चन्द्रगुप्तदवितीय ने कुतुबमीनार के नजदीक मेंहरौली में लौह स्तंम्भ का निर्माण करवांया ।
- प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान 399 ई. में चन्द्रगुप्त दवितीयके दरबार में आया और 414 ई. तक रहा । यह 14 वर्ष तक भारत में रहा । इसके दरबार में नवरत्न कालिदास , अमर सिंह रहते थे ।

कुमारगुप्त

- चन्द्रगुप्त दवितीयके बाद कुमारगुप्त शासक बना इसके समय में गुप्त साम्राज्य पर पुष्यमित्रो का आक्रमण हुआ जिसे इसने असफल कर दिया था इसी के शासन काल में नालन्दा में बौध्दविहार के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

स्कंदगुप्त

- कुमारगुप्त के बाद स्कदगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना । इसके समय में गुप्त साम्राज्य पर हुणों का आक्रमण हुआ जिसे इसने असफल कर दिया
- जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि इसनेसुदर्शन झील का पुनरुध्दार करवांया ।

अन्य शासक

- स्कंदगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य का पतन शुरू हो गया नरसिंह गुप्त के समय गुप्त साम्राज्य तीन भागो में बट गया मगध के केन्द्रीय भाग पर नर सिंह गुप्त का शासन रहा ।मालवांक्षेत्र पर भानुगुप्त तथा बंगाल क्षेत्रमें वैन्यगुप्त ने शासन स्थापित किया नरसिंह गुप्त की सबसे बडी सफलता हुण शासक मिहिरकुल को पराजित करना था ।

थानेश्वरके वर्ध्दन वंश

- हरियाण राज्य के करनाल जिले में स्थित थानेश्वर के राज्य की स्थापना पुष्यभूति नामक एक राजा ने छठी शताब्दी में किया और वंशवर्ध्दन की स्थापना की ।
- प्रभाकर वर्ध्दन ने इस राज्य की स्वतंत्रता की घोषण की एवं परम भट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि की इसकी पत्नी यशोमति से दो पुत्र और एक पुत्री का जन्म हुआ ।
- इसके बाद राज्य वर्ध्दन गद्दी पर बैठा । इसके शासन काल मेंहुणो काआक्रमण हुआ|
- हर्षवर्धन 606 ई. में थानेश्वर की गद्दी पर बैठा |इसने 647 ई. तक शासन किया । बहन राजश्री की शादी कन्नौज के मौखरि वंश के शासक गृहवर्मा के साथ हुई थी मालवां के शासक देवगुप्त ने कन्नौज पर चढ़ाई कर गृहवर्मा को मार दिया और राज्यश्री को बंदी बना लिया लेकिन राज्यश्री कारागार से भागकर जगल में सती होने चली गई उसी समय हर्ष ने दिवांकर मित्र नामक बौदध भिक्षु की सहायता से राज्य को खोज निकाला । इसके बाद कन्नौजअप्रत्यक्ष रूप से थानेश्वर के अधीन आ गया |

- हर्ष ने अपने प्रभुत्व से एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की लेकिन पुलकेशीन द्वितीय के साथ युद्धमें हर्ष पराजित हो गया था |
- बंगाल का शासक शशांक जिसने बोधगया के बोधिवृक्ष को काटवांकर गंगा में फेकवां दिया था से हर्ष का संघर्ष हुआ 619 ई. में शशाक की मृत्यु के बाद बंगाल पर अधिकार कर लिया |
- हर्ष ने कश्मीर में राजा के लिए एक राज्योचित पोशाकका प्रचलन करवांया |
- हर्ष स्वयं विदवांन था और विदवांन को संरक्षण प्रदान करता था हर्ष ने स्वयं प्रियदर्शिका,रत्नावली एवँ नागनन्द की रचना की । बाणभट्ट इसके दरबारी कवि थे जिसने हर्ष चरितम् एवं कादम्बरी की रचना की ।
- हर्ष के पूर्वज शिव एवं सूर्य की अराधना करते थे हर्ष ने महायान शाखा को राज्यश्रय प्रदान किया हर्ष के समय प्रयाग में प्रति 5 वर्ष बाद एक समारोह का आयोजन होता था हवेनसाग छठा समारोह में सम्मिलित हुआ था
- हर्ष के दरबार में मयूर तथा मातंग दिवांकर नामक कवि रहते थे ।
- हर्ष के दरबार में चीनी यात्री हवेनसांग 629 ई. में आया था इसने नालन्दा विशवविघालय में1.5 वर्ष रहकर योगशास्त्र की शिक्षाग्रहण की हवेनसांग 15 वर्ष तक भारत में रहा ।

Empowering Nation
HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!